ऋतूनाह श्रीपतिः—

मृगादिराशिद्वयभानुयोगात् षडर्त्तवः स्युः शिशिरो वसन्तः।
ग्रीष्मश्च वर्षाश्च शरश्च तद्वद्धेमन्तनामा कथितश्च षष्ठः॥ ८॥

मकर के सूर्य से दो-दो राशि के सूर्य से शिशिरादि ६ ऋतुएँ होती हैं। मकर, कुम्भ (शिशिर), मीन, मेष (वसन्त), वृष, मिथुन (ग्रीष्म), कर्क, सिंह (वर्षा), कन्या, तुला (शरद्), वृश्चिक, धनु (हेमन्त), ये छः ऋतुएँ वर्ष में होती हैं॥ ८॥

अयनज्ञानम्—

शिशिरपूर्वमृतुत्रयमुत्तरं ह्ययनमाहुरहश्च तदा परम्।
भवति दक्षिणमन्यऋतुत्रये निगदिता रजनी मरुतां च सा॥ ९॥

मकर, कुम्भ, मीन, मेष, वृष, मिथुन इन ६ राशियों के सूर्य के भ्रमणकाल को छः मास उत्तरायण कहते हैं, जिन्हें देवताओं का दिन कहते हैं। कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु इन छः राशियों पर सूर्य के भ्रमणकाल को छः मास दक्षिणायन कहते हैं, जिन्हें देवताओं की रात्रि कहते हैं॥ ९॥

अयनकृत्यम्—

गृहप्रवेशत्रिदशप्रतिष्ठा विवाहचौलव्रतबन्धपूर्वम्।
सौम्यायने कर्म शुभं विधेयं यद् गर्हितं तत्खलु दक्षिणे च॥ १०॥

नूतन गृह-प्रवेश, देव-प्रतिष्ठा, विवाह, मुण्डन, यज्ञोपवीत आदि शुभ कार्य उत्तरायण में होते हैं और निन्दित कार्य दक्षिणायन में होते हैं॥ १०॥

तिथिज्ञानम्—

प्रतिपच्च द्वितीया च तृतीया तदनन्तरम्।
चतुर्थी पञ्चमी षष्ठी सप्तमी चाष्टमी तथा॥ ११॥
नवमी दशमी चैवैकादशी द्वादशी ततः।
त्रयोदशी ततो ज्ञेया ततः प्रोक्ता चतुर्दशी।
पौर्णिमा शुक्लपक्षे तु कृष्णपक्षे त्वमा स्मृता॥ १२॥

प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, शुक्लपक्ष में पूर्णिमा, कृष्णपक्ष में उसी पन्द्रहवीं तिथि को अमा कहते हैं॥ ११-१२॥

तिथीनां नन्दादिसंज्ञा—

नन्दा च भद्रा च जया च रिक्ता, पूर्णेति सर्वास्तिथयः क्रमात्स्युः ।
कनिष्ठमध्येष्टफलास्तु शुक्ले कृष्णे भवन्त्युत्तममध्यहीनाः ॥ १३ ॥

नन्दा = १।६।११, भद्रा = २।७।१२, जया = ३।८।१३, रिक्ता ४।९।१४, पूर्णा = ५।१०।१५ इस प्रकार शुक्ल प्रतिपदा से तीन पर्याय करने पर क्रम से नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता, पूर्णा १५ तिथियों की संज्ञा हैं। ये शुक्लपक्ष में कनिष्ठ, मध्य तथा इष्ट फल देनेवाली हैं और कृष्णपक्ष में उत्तम, मध्यम तथा हीन फल देनेवाली हैं ॥ १३ ॥

नन्दादिषु कृत्यमाह श्रीपतिः—

नन्दासु चित्रोत्सववास्तुतन्त्रक्षेत्रादि कुर्वीत तथैव नृत्यम् ।
विवाहभूषाशकटाध्वयाने भद्रासु कार्याण्यपि पौष्टिकानि ॥ १४ ॥

नन्दा तिथि में चित्र, उत्सव, वास्तु, तन्त्र, क्षेत्र आदि कार्य शुभ होते हैं। भद्रा में विवाह, भूषण, शकट, यात्रा, पौष्टिक कार्य शुभ माने गये हैं ॥ १० ॥

जयासु सङ्ग्रामबलोपयोगिकार्याणि सिद्ध्यन्ति हि निर्मितानि ।
रिक्तासु विद्विड्वधबन्धघातविषाग्निशस्त्रादि च यान्ति सिद्धिम् ॥ १५ ॥

जया में संग्राम, बलोपयोगी, निर्माण कार्य सिद्ध होते हैं; रिक्ता में शत्रुता (वैर), वध, घात, विष, अग्नि, शस्त्रसम्बन्धी कार्य सिद्ध होते हैं ॥ १५ ॥

पूर्णासु माङ्गल्यविवाहयात्राः सशान्तिकं पौष्टिककर्म कार्यम् ।
सदैव दर्शे पितृकर्म युक्तं नान्यद्विदध्याच्छुभमङ्गलादि ॥ १६ ॥

पूर्णा में सभी प्रकार के मंगल कार्य, यात्रा और शान्तिक तथा पौष्टिक कर्म सिद्ध होते हैं। अमावास्या में केवल पितृ-कार्य किये जाते हैं, अन्य शुभ कार्य इसमें नहीं करना चाहिये ॥ १६ ॥

सिद्धियोगाः—

शुक्रे नन्दा बुधे भद्रा जया क्षितिजनन्दने ।
शनौ रिक्ता गुरौ पूर्णा सिद्धियोगाः प्रकीर्तिताः ॥ १७ ॥

शुक्र को नन्दा १।६।११, बुध को भद्रा २।७।१२, मंगल को जया ३।८।१३, शनि को रिक्ता ४।९।१४ और वृहस्पति को पूर्णा ५।१०।१५ हो तो सिद्ध योग है, जो यात्रा में प्रशस्त है ॥ १७ ॥

मृत्युयोगाः—

आदित्य-भौमयोर्नन्दा भद्रा भार्गव-चन्द्रयोः ।
बुधे जया गुरौ रिक्ता शनौ पूर्णा च मृत्युदा ॥ १८ ॥

रवि और मंगल को नन्दा १।६।११, शुक्र और सोम को भद्रा २।७।१२, बुध को जया ३।८।१३, वृहस्पति को रिक्ता ४।९।१४ और शनि को पूर्णा ५।१०। १५ हों तो मृत्युयोग है। इसमें यात्रा नहीं करनी चाहिये ॥ १८ ॥

अमृतयोगाः—

चन्द्रार्कयोर्भवेत् पूर्णा कुजे भद्रा जया गुरौ ।
शनिचन्द्रजयोर्नन्दा भृगौ रिक्ताऽमृताह्वया ॥ १९ ॥

रवि और सोम के दिन पूर्णा ५।१०।१५, मंगल के दिन भद्रा २।७।१२, वृहस्पति के दिन जया ३।८।१३, शनि और बुध को नन्दा अमृत योग हैं। ये यात्रा के लिए मंगलदायक हैं ॥ १९ ॥

अथ नक्षत्रप्रकरणम्

अथ नक्षत्रनामानि—

अश्विनी भरणी चैव कृत्तिका रोहिणी तथा ।
मृगशीर्षस्तथाऽऽर्द्रा च पुनर्वसुरतः परम् ॥ १ ॥
पुष्याश्लेषामघाः प्रोक्ताः पूर्वा चोत्तरफाल्गुनी ।
हस्तश्चित्रा तथा स्वाती विशाखा तदनन्तरम् ॥ २ ॥
अनुराधा तथा ज्येष्ठा मूलभं च ततः परम् ।
पूर्वाषाढोत्तराषाढाऽभिजिच्च श्रवणं ततः ॥ ३ ॥
धनिष्ठा च ततो ज्ञेया शततारा ततः परम् ।
पूर्वाभाद्रपदा प्रोक्ता ततश्चोत्तरभाद्रकम् ॥ ४ ॥
रेवती चेति भानां हि नामानि कथितानि वै ।
सप्तविंशतिसंख्यानां सदसत्फलहेतवे ॥ ५ ॥

अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशीर्ष, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, अभिजित्, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा और रेवती ये २८ नक्षत्र कहे गये हैं। पर मूल में २७ नक्षत्रों का ही नाम आया है, इसका कारण यह है कि उत्तराभाद्रपदा का अन्तिम

चतुर्थांश और श्रवण का प्रथम पंचदशांश मिलकर अभिजित् का मान है। इसलिए अभिजित् की गणना अलग नहीं होती है।

संहिताग्रन्थों में तो नक्षत्रों का अलग-अलग भोग बताया गया है। उसमें सब नक्षत्रों के भोग का योग चक्रकला में २१६०० घटाकर शेष अभिजित् का भोग माना है ॥ १–५ ॥

अथ नक्षत्रदेवता—

अश्विनावन्तको वह्निस्ततो धाता निशाकरः।
रुद्रोऽदितिर्गुरुः सर्पः पितरो भग एव च ॥ ६ ॥
अर्यमा च रविस्त्वष्टा वायुर्वह्निपुरन्दरौ।
मित्रः शक्रश्च निर्ऋतिः सलिलं च ततः परम् ॥ ७ ॥
विश्वेदेवा विधिर्विष्णुर्वसवो वरुणस्ततः।
ततोऽजपादहिर्बुध्न्यः पूषा नक्षत्रदेवता ॥ ८ ॥

अश्विनी का स्वामी अश्विनीकुमार, भरणी का यम, कृत्तिका का अग्नि, रोहिणी का ब्रह्मा, मृगशीर्ष का चन्द्रमा, आर्द्रा का रुद्र, पुनर्वसु का अदिति, पुष्य का वृहस्पति, आश्लेषा का सर्प, मघा का पितर, पूर्वाफाल्गुनी का भग (सूर्यविशेष), उत्तराफाल्गुनी का अर्यमा (सूर्यविशेष), हस्त का रवि, चित्रा का त्वष्टा (विश्वकर्मा), स्वाति का वायु, विशाखा का अग्नि और इन्द्र, अनुराधा का मित्र (सूर्यविशेष), ज्येष्ठा का इन्द्र, मूल का निर्ऋति (राक्षस), पूर्वाषाढ़ा का जल, उत्तराषाढ़ा का विश्वेदेव, अभिजित् का ब्रह्मा, श्रवण का विष्णु, धनिष्ठा का अष्टवसु, शतभिषा का वरुण, पूर्वाभाद्रपदा का अहिर्बुध्न्य (सूर्यविशेष), रेवती का पूषा (सूर्यविशेष) इस प्रकार अश्विन्यादि नक्षत्रों के देवता कहे गये हैं। जिस नक्षत्र के जो देवता हैं उन देवताओं से भी उन नक्षत्रों का ज्ञान होता है। जैसे—रुद्र से आर्द्रा, विष्णु से श्रवण, अजपाद् से पूर्वाभाद्रपदा इत्यादि ॥ ६–८ ॥

शतपदचक्रविवरणम्—

चूचेचोलाऽश्विनी प्रोक्ता लीलूलेलो भरण्यथ।
आईऊए कृत्तिका स्यादोवावीवू तु रोहिणी ॥ ९ ॥
वेवोकाकी मृगशिरः कूघङछास्तथाऽऽर्द्रकाः।
केकोहाही पुनर्वसू हूहेहोडा तु पुष्यभम् ॥ १० ॥

डीडूडेडो तु आश्लेषा मामीमूमे मघा स्मृता ।
मोटाटीटू पूर्वफल्गु टेटोपाप्युत्तरं तथा ॥ ११ ॥
पूषणाठा हस्ततारा पेपोरारी च चित्रिका ।
रूरेरोता स्मृता स्वाती तीतूतेतो विशाखिका ॥ १२ ॥
नानीनूनेऽनुराधर्क्षं नोयायीयू च शुक्रभम् ।
येयोभाभी मूलतारा पूर्वाषाढा भुधाफढाः ॥ १३ ॥
भेभोजाज्युत्तराषाढा जूजेजोषाभिजिद् भवेत् ।
खीखूखेखो श्रवणभं गागीगूगे धनिष्ठिका ॥ १४ ॥
गोसासीसू शतभिषक् सेसोदादी तु पूर्वभाक् ।
दूथझञ उत्तराभं देदोचाची तु रेवती ॥ १५ ॥

चू चे चो ला अश्विनी, ली लू ले लो भरणी, आ ई ऊ ए कृत्तिका, ओ वा वी वू रोहिणी, वे वो का की मृगशिरा, कू घ ङ छ आर्द्रा, के को हा ही पुनर्वसु, हू हे हो डा पुष्य, डी डू डे डो आश्लेषा, मा मी मू मे मघा, मो टा टी टू पूर्वाफाल्गुनी, टे टो पा पी उत्तराफाल्गुनी, पू ष णा ठ हस्त, पे पो रा री चित्रा, रु रे रो ता स्वाती, ती तू ते ता विशाखा, ना नी नू ने अनुराधा, नो या यी यू ज्येष्ठा, ये यो भा भी मूल, भु धा फ ढ पूर्वाषाढ़ा, भे भो जा जी उत्तराषाढ़ा, जू जे जो ष अभिजित्, खी खू खे खो श्रवण, गा गी गू गे धनिष्ठा, गो सा सी सू शतभिषा, से सो दा दी पूर्वाभाद्रपद, दू थ झ ञ उत्तराभाद्रपद, दे दो चा ची रेवती । इस प्रकार प्रत्येक नक्षत्र में चार-चार चरण होते हैं और ९-९ चरण की एक-एक राशि होती है । नक्षत्र के जिस चरण में जातक का जन्म हो तदनुसार अश्विन्यादि नक्षत्रों का चरणज्ञान करके जिस चरण में जो वर्ण हो उसी वर्ण के अनुसार जातक का नामाद्यक्षर होता है ।

उदाहरण—जैसे—मृगशिरा के तृतीय चरण में जिसका जन्म होगा, उसका नाम 'कलमाकान्त', 'कलाधर', 'काशीनाथ' इत्यादि हो सकता है । यदि इस पद्धति के अनुसार ङ, ण, ञ वर्ण विशिष्ट नक्षत्र का चरण हो तो उसका नामाद्यक्षर ग, ड, ज होगा, जैसे—आर्द्रा के तृतीय चरण में होने से 'गदाधर', 'गजानन', 'गङ्गाधर' इत्यादि होगा ॥ ९–१५ ॥

ध्रुवगणं तथा तत्कृत्यं च—

उत्तरात्रयरोहिण्यो भास्करश्च ध्रुवं स्थिरम् ।
तत्र स्थिरं बीजगेहशान्त्यारामादिसिद्धये ॥ १६ ॥

तीनों उत्तरा, रोहिणी, रवि दिन ध्रुव और स्थिर संज्ञक हैं, इसमें स्थिर कार्य बीज बोनां, गृह कार्य, शान्तिकर्म, वाटिका कार्य करना चाहिये ॥ १६ ॥

चरगणं तत्प्रयुक्तकार्यमाह—

स्वात्यादित्ये श्रुतेस्त्रीणि चन्द्रश्चापि चरं चलम् ।
तस्मिन् गजादिकारोहो वाटिकागमनादिकम् ॥ १७ ॥

स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा नक्षत्र और सोमवार का दिन चर और चल संज्ञक हैं। इसमें घोडा, हाथी आदि स्वयं चलनेवाले वाहन पर चढ़ना और वाटिका सम्बन्धी कार्य तथा यात्रा शुभ माने गये हैं ॥ १७ ॥

उग्रगणं तत्कृत्यं च—

पूर्वात्रयं याम्यमघे उग्रं क्रूरं कुजस्तथा ।
तस्मिन् घाताग्निशाठ्यानि विषशस्त्रादि सिद्धयति ॥ १८ ॥

तीनों पूर्वा, भरणी, मघा और मंगल का दिन उग्र और क्रूर संज्ञक हैं। इसमें घात, अग्नि, शठता, विष, शस्त्र आदि संघातक कार्य सिद्ध होते हैं ॥ १८ ॥

मिश्रगणं तत् कृत्य च

विशाखाग्नेयभे सौम्यो मिश्रं साधारणं स्मृतम् ।
तत्राऽग्निकार्यं मिश्रं च वृषोत्सर्गादिसिद्धये ॥ १९ ॥

कृत्तिका, विशाखा नक्षत्र और बुध का दिन मिश्र और साधारण संज्ञक हैं। इसमें मिश्रित कार्य, अग्निकार्य और वृषोत्सर्ग सिद्ध होते हैं ॥ १९ ॥

लघुगणं तत्कृत्यं च—

हस्ताश्विपुष्याभिजितः क्षिप्रं लघु गुरुस्तथा ।
तस्मिन् पण्यरतिज्ञानभूषाशिल्पकलादिकम् ॥ २० ॥

हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित् नक्षत्र और गुरु का दिन लघु और क्षिप्र संज्ञक हैं। इसमें विपणी, मैथुन, ज्ञानोपार्जन, शिल्प, कला आदि कार्य सिद्ध होते हैं ॥ २० ॥

मृदुगणं तत्कृत्यं च—

मृगान्त्यचित्रामित्रर्क्षं मृदु मैत्रं भृगुस्तथा ।
तत्र गीताम्बरं क्रीडा मित्रकार्यं विभूषणम् ॥ २१ ॥

मृगशिरा, चित्रा, रेवती, अनुराधा और शुक्र दिन मृदु और मैत्र संज्ञक हैं। इसमें गीत गाना, वस्त्र-धारण, खेल, मित्रता करना, भूषणधारण शुभ होता है ॥ २१ ॥

मूलेन्द्रार्द्राहिभं सौरिस्तीक्ष्णं दारुणसंज्ञकम् ।
तत्राभिचारघातोग्रभेदाः पशुदमादिकम् ॥ २२ ॥

मूल, ज्येष्ठा, आश्लेषा नक्षत्र और शनि का दिन तीक्ष्ण और दारुण संज्ञक है। इसमें अभिचार (मारण), घात, उग्र, भेद, पशु दमन (कुटाना तथा नाथना) आदि कार्य सिद्ध होते हैं ॥ २२ ॥

पञ्चकम्—

धनिष्ठार्द्धोत्तरं पञ्च ऋक्षेष्वेषु त्यजेद् बुधः ।
याम्यदिग्गमनं शय्या पूरणं गेहगोपनम् ॥ २३ ॥
स्तम्भोच्छ्रायं प्रेतदाहं तृणकाष्ठादि संग्रहम् ।
भवेत् पञ्चगुणं चात्र जातं लब्धं मृतं मतम् ॥ २४ ॥

धनिष्ठा का उत्तरार्ध, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती ये पञ्चक नक्षत्र हैं। इसमें स्तम्भ गाड़ना, प्रेतदाह, तृणकाष्ठ संग्रह, दक्षिण दिशा की यात्रा, चारपाई तथा घर का छाना वर्जित है। क्योंकि शास्त्रकारों ने पञ्चक का पाँचगुणा फल माना है। जैसे :—एक शव का दाह करने पर पाँच शव का दाह करना पड़ता है। इसी तरह वर्णित प्रत्येक कार्य का पंचगुणित फल होता है ॥ २३–२४ ॥

सफलत्रिपुष्करयोग—

भद्रातिथौ रविज-भूतनयार्कवारे,
द्वीशार्यमाजचरणादितिवह्निवैश्वे ।
त्रैपुष्करो भवति मृत्युविनाशवृद्धौ,
त्रैगुण्यदो द्विगुणकृद्वसुतक्षचान्द्रे ॥ २५ ॥

भद्रातिथि २।७।१२ दिन, शनि, मंगल, रवि, नक्षत्र—कृत्तिका, पुनर्वसु उत्तराफाल्गुनी, विशाखा, उत्तराषाढ़, पूर्वाभाद्रपद में से किसी तीन का एक दिन संयोग होने पर त्रिपुष्कर योग होता है। इसमें मृत्यु, हानि तथा वृद्धि, लाभ होने पर त्रिगुणित फल होता है और उन्हीं तिथि और दोनों में मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा का योग होने पर द्विपुष्कर योग होता है। इसमें द्विगुण फल होता है ॥ २५ ॥

नक्षत्राणामन्धादि संज्ञा—

अन्धकमथमन्दाक्षं मध्यमसंज्ञं सुलोचनं पश्चात् ।
पर्यायेण च गणयेच्चतुर्विधं ब्रह्मधिष्ण्यांश्च ॥ २६ ॥

रोहिणी से चार आवृत्ति करने पर चार अन्धादि संज्ञक नक्षत्र होते हैं। जैसे :—

अन्धाक्ष	मन्दाक्ष	मध्याक्ष	सुलोचन
रोहिणी, पुष्य	मृगशिरा, आश्लेषा	आर्द्रा, मघा	पुनर्वसु, पू. फा.
उ. फा., विशाखा	हस्त, अनुराधा	चित्रा, ज्येष्ठा	स्वाती, मूल
पू. षा., धनिष्ठा	उ. षा., शतभिष	अभिजित्, पू.भा.	श्रवण, ऊ. भा.
रेवती।	अश्विनी।	भरणी।	कृत्तिका ।।२६।।

अन्धादिनक्षत्राणां फलम्—

विनष्टार्थस्य लाभोऽन्धे शीघ्रं मन्दे प्रयत्नतः।
स्याद् दूरे श्रवणं मध्ये श्रुत्याप्ती न सुलोचने ।। २७ ।।

अन्ध संज्ञक नक्षत्रों में भूली हुई वस्तु शीघ्र मिलती है। मन्दाक्ष में प्रयास करने पर मिलती है और मध्याक्ष में दूर श्रवण मात्र होता है और सुलोचन में न सुनाई पड़ती है और न प्राप्त होती है ।। २७ ।।

करणज्ञानम्—

वर्तमानतिथिर्व्येकाद्विघ्नी सप्तावशेषकम्।
तिथेः पूर्वार्धकरणं तत् सैकं स्यात्परे दले ।। २८ ।।

एक तिथि में दो करण होता है। वर्तमान करण जानने के लिए तिथि को दूना कर एक घटाकर सात का भाग देने पर शेष वर्तमान तिथि के पूर्वार्ध में करण होता है। शेष में एक जोड़ने पर तिथि के उत्तरार्ध में करण होता है ।। २८ ।।

योगनामानि—

विष्कुम्भः प्रीतिरायुष्मान् सौभाग्यः शोभनाभिधः।
अतिगण्डः सुकर्माख्यो धृतिः शूलाभिधानकः ।। २९ ।।
गण्डो वृद्धिर्ध्रुवश्चाथ व्याघातो हर्षणाह्वयः।
वज्रसिद्धिर्व्यतीपातो वीरयान्परिघः शिवः ।। ३० ।।
सिद्धिः साध्यः शुभः शुक्लो ब्रह्मा चैन्द्रोऽथ वैधृतिः।
योगानां ज्ञेयमेतेषां स्वनामसदृशं फलम् ।। ३१ ।।
वाक्पतेरर्कनक्षत्रं श्रवणाचन्द्रमेव च।
गणयेत्तद्युतिं कुर्याद्योगः स्याद्वृक्षशेषतः ।। ३२ ।।

विष्कुम्भ, प्रीति, आयुष्मान्, सौभाग्य, शोभन, अतिगंड, सुकर्मा, धृति, शूल, गण्ड, वृद्धि, ध्रुव, व्याघात, हर्षण, वज्र, सिद्धि, व्यतीपात, वरीयान, परिघ, शिव, सिद्धि, साध्य, शुभ, शुक्ल, ब्रह्मा, ऐन्द्र और वैधृति ये सत्ताईस योग शास्त्र में कथित हैं ॥ २९–३२ ॥

बवादिसप्तकरणानि—

बवाह्वयं बालवकौलवाख्ये, ततो भवेत्तै तिलनामधेयम्।

गराभिधानं वणिजं च विष्टिरित्याहुरार्या करणानि सप्त ॥ ३३ ॥

चतुर्दशी या शशिना विहीना तस्या विभागे शकुनिर्द्वितीये।

दर्शाद्ययोस्तच्चतुरंघ्रिनागो किंस्तुघ्नमाद्ये प्रतिपद्दले च ॥ ३४ ॥

बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज, विष्टि ये सात चर करण हैं और कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के अन्त में शकुनि अमावास्या के पूर्वार्ध में चतुष्पद, उत्तरार्ध में नाग, शुक्ल प्रतिपदा के पूर्वार्ध में किंस्तुघ्न ये चार स्थिर करण हैं ॥ २३–३४ ॥

विष्टि-ज्ञानम्—

एकादश्यां चतुर्थ्यां च शुक्ले पक्षे परे दले।

अष्टम्यां पूर्णिमायां च भद्रा पूर्वदले स्मृता ॥ ३५ ॥

तृतीयायां दशम्यां च कृष्णे पक्षे परे दले।

सप्तम्यां च चतुर्दश्यां भद्रा पूर्वदले भवेत् ॥ ३६ ॥

शुक्ल पक्ष की एकादशी, चतुर्थी के उत्तरार्ध में और अष्टमी, पूर्णिमा के पूर्वार्ध में भद्रा होती है। कृष्ण पक्ष की तृतीया, दशमी के उत्तरार्ध और सप्तमी, चतुर्दशी के पूर्वार्ध में भद्रा होती है ॥ ३५–३६ ॥

भद्रा-वास:—

कन्या-तुला-मकर-धन्विषु नागलोके

मेषालिवैणिकवृषेषु सुरालये स्यात्।

पाठीन-सिंह घट-कर्कटकेषु मर्त्ये

चन्द्रे वदन्ति मुनयस्त्रिविधां हि विष्टिम् ॥ ३७ ॥

कन्या, तुला, धनु, मकर राशि के चन्द्रमा होने पर यदि भद्रा हो तो भद्रा का वास पाताल लोक में रहता है और मेष, वृष, मिथुन, विश्चिक राशि के चन्द्र में स्वर्ग लोक में तथा कर्क, सिंह, कुम्भ, मीन के चन्द्र में मृत्युलोक में भद्रा का निवास होता है। मृत्युलोक की भद्रा शुभ नहीं है ॥ ३७ ॥

———

अथ राशिप्रकरणम्

राशिनामानि—

मेषो वृषोऽथ मिथुनं कर्कटः सिंहकन्यके ।
तुलाऽथ वृश्चिको धन्वी मकर कुम्भमीनकौ ॥ १ ॥

मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ, मीन ये बारह राशियाँ हैं ॥ १ ॥

राशीशानाह—

मेषवृश्चिकयोर्भौमः शुक्रो वृषतुलाधिपः ।
बुधः कन्यामिथुनयोः पतिः कर्कस्य चन्द्रमाः ॥
जीवो मीनधनुः स्वामी शनिर्मकरकुम्भयोः ।
सिंहस्याधिपतिः सूर्यः कथितो गणकोत्तमैः ॥ २ ॥

मेष-वृश्चिक का स्वामी मंगल, वृष तुला का अधिपति शुक्र, कन्या-मिथुन का स्वामी बुध, कर्क का स्वामी चन्द्रमा, मीन-धनु का स्वामी वृहस्पति, मकर-कुम्भ का स्वामी शनि और सिंह का स्वामी सूर्य हैं ॥ २ ॥

उच्चनीचग्रहानाह—

अजवृषभमृगाङ्गनाकुलीरा झषवणिजौ च दिवाकरादितुङ्गाः ।
दशशिखिमनुयुक्तिथीन्द्रियांशैस्त्रिनवकर्विशतिभिश्च तेऽस्तनीचाः ॥ ३ ॥

सूर्य मेष में १० अंश परमोच्च, चन्द्रमा वृष में ३ अंश, भौम मकर में २८ अंश, बुध कन्या में १५ अंश, गुरु कर्क में ५ अंश, शुक्र मीन में २७ अंश, शनि तुला में २७ अंश परम नीच, २० अंश परमोच्च है और उच्च से सातवीं राशि में है ॥ ३ ॥

चन्द्रवासमाह—

मेषे च सिंहे धनुपूर्वभागे वृषे च कन्या मकरे च याम्ये ।
युग्मे तुलायां च घटे प्रतीच्यां कर्कालिमीने दिशि चोत्तरस्याम् ॥ ४ ॥

मेष, सिंह, धनु, राशि में पूर्व, वृष, कन्या, मकर राशि में दक्षिण, मिथुन, तुला कुम्भ राशि में पश्चिम और कर्क, वृश्चिक, मीन राशि में उत्तर दिशा में चन्द्रमा का वास होता है ॥ ४ ॥

राशिपरिज्ञानम्—

अश्विनी भरणी कृत्तिकापादे मेषः ।
कृत्तिकायास्त्रयः पादा रोहिणी मृगशिरोऽर्द्धं वृषः ॥ ५ ॥

मृगशिरोऽर्धमार्द्रा पुनर्वसुपादत्रयं मिथुनम् ।
पुनर्वसुपादमेकं पुष्य अश्लेषान्तं कर्कः ॥ ६ ॥
मघा च पूर्वाफाल्गुनी उत्तरापादे सिंहः ।
उत्तरायास्त्रयः पादा हस्ताश्चित्रार्धं कन्या ॥ ७ ॥
चित्रार्धं स्वातिर्विशाखापादत्रयं तुला ।
विशाखापादमेकमनुराधा ज्येष्ठान्तं वृश्चिकः ॥ ८ ॥
मूलम् च पूर्वाषाढा उत्तरापादे धनुः ।
उत्तरायास्त्रयः पादाः श्रवणो धनिष्ठार्धं मकरः ॥ ९ ॥
धनिष्ठार्धं शतभिषा पूर्वाभाद्रपदापादत्रयं कुम्भः ।
पूर्वाभाद्रपदपादमेकमुत्तरा रेवत्यन्तं मीनः ॥ १० ॥

अश्विनी, भरणी और कृत्तिका के एक पाद (चरण) पर्यन्त मेष राशि होती है, कृत्तिका के तीन चरण, रोहिणी और मृगशिरा के दो चरण वृष राशि, मृगशिरा के दो चरण, आर्द्रा और पुनर्वसु के तीन चरण मिथुन राशि, पुनर्वसु का एक चरण, पुष्य, आश्लेषा कर्क राशि, मघा, पूर्वाफाल्गुनी और उत्तराफाल्गुनी के एक चरण सिंह राशि है, उत्तराफाल्गुनी के तीन पाद, हस्त तथा चित्रा के दो चरण, कन्या, चित्रा के दो चरण, स्वाती, विशाखा के तीन चरण, तुला, विशाखा के एक चरण, अनुराधा और ज्येष्ठा, वृश्चिक, मूल, पूर्वाषाढा और उत्तराषाढा के एक चरण, धनु, उत्तराषाढा के तीन चरण, श्रवण और धनिष्ठा के दो चरण, मकर, धनिष्ठा के दो चरण, शतभिषा और पूर्वाभाद्रपदा के तीन चरण, कुम्भ एवं पूर्वाभाद्रपदा का एक चरण, उत्तराभाद्रपदा और रेवती मीन राशि होता है। (स्पष्टार्थ अग्रिम चक्र देखें) ॥ ५–१० ॥

चन्द्रफलम्—

सम्मुखे चार्थलाभाय पृष्ठे चन्द्रे धनक्षयः ।
दक्षिणे सुखसम्पत्तिर्वामे तु मरणं ध्रुवम् ॥ ११ ॥

सम्मुख चन्द्रमा कार्य के आरम्भ में या यात्रा में धन का लाभ करता है और पीछे का चन्द्रमा धन का विनाश, दाहिने सुख और सम्पत्ति तथा वाम चन्द्रमा निश्चय मरण करता है ॥ ११ ॥

आद्ये चन्द्रः श्रियं कुर्यान्मनस्तोषं द्वितीयके ।
तृतीये धनसम्पत्तिश्चतुर्थे कलहागमः ॥ १२ ॥

जन्म-नक्षत्र-चरण-राशिबोधकचक्रम्

राशि				
मेष—	चू. चे. चो. ला.	ली. लू. ले. लो.	आ	
	अश्विनी	भरणी ४	कृत्तिका १	=९
वृष—	इ. उ. ए.	ओ वा वि वु	वे वो	
	कृत्तिका ३	रोहिणी ४	मृगशिरा २	=९
मिथुन—	का. की.	कु घ ङ छ	के को हा	
	मृगशिरा २	आर्द्रा ४	पुनर्वसु ३	=९
कर्क—	हि	हू हे हो डा	डी डू डे डो	
	पुनर्वसु १	पुष्य ४	आश्लेषा ४	=९
सिंह—	मा. मी. मू. मे.	मो टा टी टू	टे	
	मघा ४	पूर्वाफाल्गुनी ४	उत्तराफाल्गुनी १	=९
कन्या—	टो. पा. पी.	पू ष ण ठ	पे पो	
	उत्तराफाल्गुनी २	हस्त ४	चित्रा २	=९
तुला—	रा. री.	रू रे रो ता	ती तू ते	
	चित्रा २	स्वाती ४	विशाखा ३	=९
वृश्चिक—	तो	ना नी नू ने	नो या यि यू	
	विशाखा १	अनुराधा ४	ज्येष्ठा	=९
धनु—	ये. यो. भा. भी.	भू ध फ ढा	भे	
	मूल ४	पूर्वाषाढा ४	उत्तराषाढा १	=९
मकर—	भो जा जी	खी. खू. खे. खो.	गा गी	
	उत्तराषाढा ३	श्रवण ४	धनिष्ठा २	=९
कुम्भ—	गू. गे.	गो. सा. सि. सू.	शे शो दा	
	धनिष्ठा २	शतभिषा ४	पूर्वाभाद्रपदा ३	=९
मीन—	दी	दू. थ. झ. ञ.	दे. दो. चा. ची.	
	पूर्वाभाद्रपदा १	उत्तराभाद्रपदा ४	रेवती ४	=९

पञ्चमे ज्ञानवृद्धिश्च षष्ठे सम्पत्तिरुत्तमा ।
सप्तमे राजसम्मानं मरणं चाष्टमे तथा ॥ १३ ॥
नवमे धर्मलाभश्च दशमे मनसेप्सितम् ।
एकादशे सर्वलाभो द्वादशे केवलं क्षतिः ॥ १४ ॥

प्रथम (जन्म) राशि के चन्द्र में लाभ, दूसरे में मन का सन्तोष, तीसरे में धन-सम्पत्ति, चौथे में झगड़ा, पाँचवें में ज्ञान की वृद्धि, छठे में उत्तम सम्पत्ति, सातवें में राजसम्मान, आठवें में मरण (अतिक्लेश), नवें में धर्मलाभ, दसवें में मनोऽभिलषित सिद्धि, ग्यारहवें में सर्वलाभ, बारहवें में केवल हानि होती है ॥ १२–१४ ॥

ग्रहाणां भुक्तसंख्या—

सप्तविंशति शुक्रः स्यादेकविंशद् बुधस्तथा ।
त्रिपक्षं भूमिपुत्रस्तु मासमेकं तु भास्करः ॥ १५ ॥
गुरुस्त्रिदशमासांश्च त्रिंशन्मासान् शनैश्चरः ।
राहुकेतू सार्धवर्षं ग्रहसंख्या विगद्यते ॥ १६ ॥

एक राशि पर शुक्र सत्ताईस दिन, बुध इक्कीस दिन, मंगल डेढ़ महीना, सूर्य एक मास, बृहस्पति तेरह महीना, शनैश्चर ढाई वर्ष और राहु-केतू डेढ़-डेढ़ वर्ष रहते ॥ १५–१६ ॥

इति राशि-प्रकरणम्

—:०:—

अथ मुहूर्तप्रकरणम्

तदादौ गर्भाधानम्—

स्त्रीणामृतुर्भवति षोडशवासराणि
तत्रादितः परिहरेच्च निशाश्चतस्रः ।
युग्मासु रात्रिषु नरा विषमासु नार्यः
कुर्यान्निषेकमथ तेष्वपि पर्ववर्ज्यम् ॥ १ ॥

स्त्रियों के गर्भाधान में रजोदर्शन के दिन से सोलह दिन तक गर्भाधान का समय है, जिनमें प्रथम चार रात्रि छोड़कर शेष बारह दिन के भीतर विषम रात्रि ५–७–९ इत्यादि में सहवास करने से कन्या और सम रात्रि ६–८–१० इत्यादि में सहवास करने से पुत्र होता है। किन्तु इसके भीतर पर्वदिन में सहवास का निषेध है ॥ १ ॥

पर्वाणि यथा—

चतुर्दश्यष्टमी चैव अमावास्या च पूर्णिमा ।
पर्वाण्येतानि राजेन्द्र रविसंक्रान्तिरेव च ॥ २ ॥

चतुर्दशी, अष्टमी, अमावास्या, पूर्णिमा और संक्रान्ति ये पर्व के दिन हैं ॥ २ ॥

गर्भाधाने विहितनक्षत्राणि—

हरिहस्तानुराधाश्च स्वातीवरुणवासवम् ।
त्रीण्युत्तराणि मूलं च रोहिणी चोत्तमा स्मृता ॥ ३ ॥
चित्रादैत्येन्द्रतिष्याणि तुरगं च समध्यमम् ।
शेषभान्यधमान्याहुर्वर्जनीया निषेचके ॥ ४ ॥

श्रवण, हस्त, अनुराधा, स्वाती, शतभिषा, धनिष्ठा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा उत्तराभाद्रपद, मूल और रोहिणी ये नक्षत्र गर्भाधान में उत्तम हैं। चित्रा, पुनर्वसु, पुष्य और आश्विनी ये नक्षत्र गर्भाधान के लिए मध्यम कहे गये हैं और शेष नक्षत्र वर्जित हैं ॥ ३–४ ॥

गर्भाधाने विहिततिथयः—

नन्दा भद्रा स्मृता पुंसि स्त्रीषु पूर्णा जया स्मृता ।
रिक्ता नपुंसके ज्ञेया तस्मात्तां परिवर्जयेत् ॥ ५ ॥

नन्दा तथा भद्रा तिथि पुरुष संज्ञक हैं। जया और पूर्णा स्त्री संज्ञक हैं। रिक्ता नपुंसक संज्ञक है। पुरुष और स्त्री संज्ञक तिथि में गर्भाधान शुभ है और नपुंसक संज्ञक में वर्जित है ॥ ५ ॥

गर्भाधाने विहितदिनानि—

वासरा पुत्रदाः प्रोक्ताः कुजार्कगुरवो ध्रुवम् ।
कन्यादौ भृगुशीतांशू क्लीबदौ शनिचन्द्रजौ ॥ ६ ॥

वृहस्पति, रवि और मङ्गल इन दिनों में गर्भाधान से पुत्र होता है और शुक्र एवं सोम में कन्या तथा शनि और बुध में नपुंसक होता ॥ ६ ॥

सूतीस्नानम्—

करेन्द्रभाग्यानिलवासवान्त्यमैत्राश्विध्रुवभेऽह्नि पुंसाम् ।
तिथावरिक्ते शुभमामनन्ति प्रसूतिकास्नानविधौ मुनीन्द्राः ॥ ७ ॥

हस्त, ज्येष्ठा, पूर्वाफाल्गुनी, स्वाती, धनिष्ठा, रेवती और अनुराधा, अश्विनी,

एवं ध्रुवसंज्ञक नक्षत्रों में तथा पुरुषसंज्ञक दिन में एवं रिक्ता वर्जित तिथि में बालक सहित प्रसूती को स्नान करना मुनि लोगों ने शुभ कहा है ॥ ७ ॥

स्नाता प्रसूताप्यसुता बुधे च स्नाता च वन्ध्या भृगुनन्दने च ।
सौरे च मृत्युः पयहानिरिन्दौ पुत्रार्थलाभौ रविभौमजीवे ॥ ८ ॥

बुधवार में स्नान करने से प्रसूता स्त्री असुता (पुत्ररहित) हो जाती है, शुक्रवार में स्नान करने से वन्ध्या (मृतवन्ध्या) होती है, शनिवार में स्नान मृत्युकारक होता है, सोमवार में स्नान करने से स्तन्य (दूध) का नाश होता है तथा रवि, मङ्गल और गुरुवार में स्नान करने से पुत्र, धन और इच्छित वस्तु प्राप्त होती है ॥ ८ ॥

प्रसूतिशुद्धदिवसाः—

अजा गावो महिष्यश्च ब्राह्मणी नवसूतिका ।
दशाहेनैव शुद्ध्यन्ति भूमिष्ठञ्च नवोदकम् ॥ ९ ॥

महिषी, बकरी, गौ और ब्राह्मणी ये सब प्रसूति होने पर और भूमिष्ठ नवीन जल दश दिन के बाद शुद्ध हो जाता है ॥ ९ ॥

नामकरणम्—

वस्वादित्यगुरूत्तरादिति मृगैश्चित्राऽनुराधानिलैः
मूलावैष्णवरेवतीन्दुतुरगैः संज्ञां प्रकुर्याच्छिशोः ।
वारेऽहर्पतिचन्द्रवाक्पतिबुधे लग्ने गुरौ शोभने
सौम्यैः केन्द्रनवात्मजन्मसहितैः पापैश्च शेषस्थितैः ॥ १० ॥

धनिष्ठा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपदा, उत्तराषाढा), हस्त, मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, स्वाती, मूल, श्रवण, रेवती, ज्येष्ठा और अश्विनी इन नक्षत्रों में रवि, सोम, बुध और बृहस्पति दिनों में शुभ लग्नस्थ बृहस्पति हों और शुभग्रह १. ४. ७. १०. ९. ५. इन स्थानों में हों या जन्मराशि में शुभग्रह हों, पाप ग्रह शेष स्थान में हों तो नामकरण शुभ है ॥ १० ॥

निष्क्रमणम्—

आर्द्राऽधोमुखवर्जितानुपहतर्क्षे वाप्यरिक्ते तिथौ
वारे भौमशनीतरे घटतुलासिंहालिकन्योदये ।
सद्दृष्टेऽथ चतुर्थमासि यदि वा मासे तृतीये शशि-
न्यक्षीणे शुभदे शिशोरथ गृहान्निष्कासनं कारयेत् ॥ ११ ॥

आर्द्रा, अधोमुख और सूर्य किरण से हत नक्षत्रों से रहित नक्षत्रों में रिक्ता वर्जित तिथि और मङ्गल तथा शनिरहित दिनों में कुम्भ, तुला, सिंह, वृश्चिक और कन्या लग्नों में शुभग्रह की दृष्टि हो, तीसरे और चौथे महीने में, शुक्लपक्ष में बालक को प्रथमतः बाहर निकालना शुभ है ॥ ११ ॥

भूम्युपवेशनम्—

पृथ्वीं वराहं विधिवत्प्रपूज्य शुद्धे कुजे पञ्चममासि बालम् ।
क्षिप्रध्रुवे सत्तिथिवासराद्ये निवेशयेत्कौ कटिसूत्रबद्धम् ॥ १२ ॥

पृथ्वी और वराहरूप भगवान् की विधिवत् पूजा करके, मङ्गल शुद्ध हों, पाँचवें महीने में क्षिप्र और ध्रुव संज्ञक नक्षत्रों में शुभ तिथि और शुभ दिन में बालक को कटि-सूत्र (करधन) कमर में बाँधकर पृथ्वी पर बैठाना शुभ है ॥ १२ ॥

शिशुविलोकनम्—

तृतीये मासि यात्रोक्ततिथावह्व्यर्कचन्द्रयोः ।
वारे च कुलरीत्या वा शुभं शिशुविलोकनम् ॥ १३ ॥

तीसरे महीने में और यात्रा में कहे तिथि-नक्षत्रों में रवि, सोम दिन में अपने कुलाचार के अनुसार बालक को प्रथम बार देखना शुभ है ॥ १३ ॥

दन्तोत्पत्तिकथनम्—

जन्मतः पञ्चमासेषु दन्तोत्पत्तिर्न शोभना ।
शुभा षष्ठादिके ज्ञेया न सदन्तजनिः शुभा ॥ १४ ॥

जन्म से पाँचवें महीने तक बालक को दाँत होना अशुभ है और छठे आदि महीने से शुभ है तथा दाँत के सहित बालक का जन्म होना शुभ नहीं है ॥ १४ ॥

अन्नप्राशनमुहूर्तं :—

आद्यान्नप्राशने पूर्वाः सार्पेशजलपान्तकाः ।
नक्षत्रेषु परित्याज्यौ वारौ भौमार्कनन्दनौ ॥ १५ ॥
द्वादशी सप्तमी रिक्ता पर्वनन्दाविवर्जिताः ।
लग्नेषु चाण्डजस्त्याज्यस्तथा मेषसरीसृपौ ॥ १६ ॥
शुक्लपक्षः शुभो योगः संग्राह्यः शुभचन्द्रमाः ।
मासौ षष्ठाष्टमौ पुंसां स्त्रीणां मासश्च पञ्चमः ॥ १७ ॥

प्रथम अन्नप्राशन के समय तीनों पूर्वा, आश्लेषा, आर्द्रा, शतभिषा, भरणी और रेवती ये नक्षत्र त्याज्य हैं, मंगल और शनैश्चर के दिन त्याज्य हैं, द्वादशी १२, सप्तमी ७, रिक्ता ४, ९, १४, पर्व ३०, १५, कृष्णाष्टमी ८, संक्रान्ति; नन्दा १, ६, ११, ये सब तिथि एवं मीन, मेष और वृश्चिक ये लग्न त्याज्य हैं, उक्त निषिद्ध के अतिरिक्त अन्य नक्षत्र, अन्य वार और तिथियाँ, शुक्लपक्ष, शुभयोग शुभ चन्द्रमा ये सब ग्राह्य हैं तथा पुरुषों के लिए जन्म से छठाँ या आठवाँ महीना एवं स्त्रियों के लिए पाँचवाँ महीना ग्राह्य है ।। १५-१७ ।।

मुण्डनमुहूर्तः—

पुनर्वसुद्वये ज्येष्ठामृगे च श्रवणत्रये ।
हस्तत्रयेऽश्विरेवत्यां शुक्लपक्षोत्तरायणे ।। १८ ।।

लग्ने गोस्त्रीधनु-कुम्भे मकरे मन्मथे तथा ।
सौम्ये वारे शुभे योगे चूडाकर्म स्मृतं बुधैः ।। १९ ।।

पुनर्वसु, पुष्य, ज्येष्ठा, मृगशिरा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अश्विनी और रेवती इन नक्षत्रों में, शुक्लपक्ष और उत्तरायण (मकर, कुम्भ, मीन, मेष, वृष और मिथुन) के सूर्य में, वृष, कन्या, धनु, कुम्भ, मकर और मिथुन लग्न में, सौम्य अर्थात् सोम, बुध, गुरु और शुक्र इन वारों में एवं शुभयोग में पण्डितों ने मुण्डन (चूडाकर्म) करने की विधि कही है ।। १८-१९ ।।

विद्यारम्भमुहूर्तः—

हस्तत्रये हरिद्वन्द्वे पूर्वाश्विमृगपञ्चके ।
मूले पूष्णि च नक्षत्रे बुधेऽर्के गुरुशुक्रयोः ।। २० ।।

देवोत्थाने मीनचापे लग्ने वर्षे च पञ्चमे ।
विद्यारम्भोऽत्र वर्ज्याश्च षष्ट्यनध्यायरिक्तकाः ।। २१ ।।

हस्त, चित्रा, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा, तीनों पूर्वा, अश्विनी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मूल और रेवती इन नक्षत्रों में, सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र इन वारों में, देवोत्थान में अर्थात् कार्तिक शुक्ला ११ से आषाढ़ शुक्ला १० पर्यन्त, मीन और धनु लग्न में और पाँचवें वर्ष में विद्यारम्भ करना चाहिए । विद्यारम्भ में षष्ठी ६, अनध्याय (अष्टमी तथा प्रतिपदा) और रिक्ता ४, ९, १४ तिथियाँ वर्जित हैं ।। २०-२१ ।।

यज्ञोपवीतमुहूर्त:—

पूर्वाषाढाश्विनीहस्तद्वये　च　श्रवणद्वये ।
ज्येष्ठाभगमृगे पुष्ये रेवत्यां चोत्तरायणे ॥ २२ ॥
द्वितीयायां तृतीयायां पञ्चम्यां दशमीत्रये ।
सूर्ये शुक्रे गुरौ चन्द्रे बुधे पक्षे तथा सिते ॥ २३ ॥
लग्ने　वृषधनुःसिंहे　कन्यामिथुनयोरपि ।
व्रतबन्धः शुभे योगे ब्रह्मक्षत्रविशां भवेत् ॥ २४ ॥

पूर्वाषढ़ा, अश्विनी, हस्त, चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, ज्येष्ठा, पूर्वाफाल्गुनी, मृगशिरा, पुष्य और रेवती इन नक्षत्रों में, उत्तरायण में द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी, दशमी, एकादशी और द्वादशी इन तिथियों में, सूर्य, सोम, बुध, गुरु और शुक्र इन वारों में, शुक्लपक्ष में वृष, धनु, सिंह, कन्या और मिथुन इन लग्नों एवं शुभयोग में ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य इन तीनों वर्णों का यज्ञोपवीत (जनेऊ) होना चाहिए ॥ २२–२४ ।

अथ उपनयने वर्षशुद्धि:—

विप्राणां व्रतबन्धनं निगदितं गर्भाज्जनेर्वाष्टमे
वर्षे वाप्यथ पञ्चमे क्षितिभुजां षष्ठे तथैकादशे ।
वैश्यानां पुनरष्टमेऽप्यथ पुनः स्याद् द्वादशे वत्सरे
कालेऽथ द्विगुणे गते निगदिते गौणं तदाऽहुर्बुधाः ॥ २५ ॥

ब्राह्मणों के लिए गर्भ से या जन्म से आठवें और पाँचवें वर्ष में, क्षत्रियों के लिए गर्भ से या जन्म से छठे और ग्यारहवें वर्ष में एवं वैश्य के लिए आठवें और बारहवें वर्ष में व्रतवन्ध विद्वानों ने श्रेष्ठ कहा है, और कहे हुए समय से यदि द्विगुण समय व्यतीत हो जाय तो 'गौण' काल होता है ॥ २५ ॥

उपनयने गुरुशुद्धि:—

बटु-कन्या-जन्म-राशेस्त्रिकोणायद्विसप्तगः　।
श्रेष्ठो गुरुः खषट्त्र्याद्ये पूजयाऽन्यत्र निन्दितः ॥ २६ ॥

वालक या कन्या की जन्मराशि से ९, ५, ११, २, ७, राशि में स्थित गुरु श्रेष्ठ है और १०, ६, ३, १ इन राशियों में स्थित गुरु पूजा से शुभ है तथा अन्यत्र ४, ८, १२ में गुरु निषिद्ध है अर्थात् श्रेष्ठ नहीं है ॥ २६ ॥

गुरुदौष्ट्यादौ परिहारमाह—

स्वोच्चे स्वभे स्वमैत्रे वा स्वांशे वर्गोत्तमे गुरुः।
रिःफाष्टतुर्यगोऽपीष्टो नीचारिस्थः शुभोऽप्यसत् ॥ २७ ॥

अपने उच्च में, गृह में, अपने मित्र की राशि में, अपने नवांश में, अपने वर्गोत्तम में स्थित रहने से गुरु द्वादश, चतुर्थ, अष्टम राशि में रहने पर भी शुभ हैं। नीच और शत्रु राशि में स्थित गुरु शुभ होने पर भी अशुभ फल देते हैं ॥ २७ ॥

अथ छुरिकाबन्धनम्—

विचैत्रव्रतमासादौ विभौमास्ते विभूमिजे।
छुरिकाबन्धनं शस्तं नृपाणां प्राग्विवाहतः ॥ २८ ॥

चैत्र को छोड़ व्रतबन्ध में कहे हुए महीनों में भौमास्त तथा बुधवार को छोड़कर विवाह से पहले राजाओं को हथियार बाँधना शुभ है ॥ २८ ॥

इति मुहूर्तप्रकरणम्

अथ विवाहप्रकरणम्

अथ वरवरण (तिलक) मुहूर्त्तः—

वरवृत्तिं शुभे काले गीतवाद्यादिभिर्युतः।
ध्रुवभे कृत्तिकापूर्वा कुर्याद्वापि विवाहभे ॥ १ ॥
उपवीतं फलं पुष्पं वासांसि विविधानि च।
देयं वराय वरणे कन्याभ्रात्रा द्विजेन वा ॥ २ ॥

शुभ मुहूर्त्त में गीत वाद्य से युक्त होकर ध्रुवसंज्ञक, कृत्तिका, तीनों पूर्वा और विवाह में कहे हुए नक्षत्रों में, यज्ञोपवीत, फल-पुष्प तथा अनेक प्रकार के वस्त्र, रत्न आदि से युक्त होकर कन्या का भाई या ब्राह्मण वर का वरण (तिलक करें) ॥ १–२ ॥

अथ कन्यावरणम्—

पूर्वात्रय-श्रवण-मित्रभ-वैश्वदेव-हौताशवासवसमीरणदैवतेषु।
द्राक्षाफलेक्षु कुसुमाक्षतपूर्णपाणिरश्रान्तशान्तहृदयो वरयेत्कुमारीम् ॥ ३ ॥

तीनों पूर्वा, श्रवण, अनुराधा, उत्तराषाढ़ा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा, स्वाती और विशाखा इन नक्षत्रों में अंगूर आदि फल, गन्ने की गड़ेरी, फूल तथा अक्षत से पूर्ण अञ्जलिबद्ध होकर शान्तिपूर्वक कुमारी (कन्या) का वरण करना शुभ है ॥ ३ ॥

अथ तैलहरिद्रालेपनम्—

मेषादिराशिजवधूवरयोर्बटोश्च
तैलादिलेपनविधौ कथिताऽत्र संख्या ।
शैला दिशः शरदिगक्षनगाद्रिबाण-
बाणाक्षबाणगिरयो विबुधैस्तु कैश्चित् ॥ ४ ॥

शतपद-चक्रानुसार वर, कन्या या कुमार का नामाद्यक्षर नामराशि जानकर मेषादि राशिक्रम से तैलादिलेपन में पण्डितों ने ७, १०, ५, १०, ५, ७, ७, ५, ५, ५, ५, ७ संख्या कही है ॥ ४ ॥

अथ मण्डपनिर्माणम्, तस्य लक्षणम्—

मङ्गलेषु च सर्वेषु मण्डपो गृहमानतः ।
कार्यः षोडशहस्तो वा द्विषड्ढस्तो दशावधि ॥ ५ ॥
स्तम्भैश्चतुर्भिरेवात्र वेदी मध्ये प्रतिष्ठिता ।
शोभिता चित्रिता कुम्भैरासमन्ताच्चतुर्दिशम् ॥ ६ ॥
द्वारविद्धा बलीविद्धा कूपवृक्षव्यधा तथा ।
न कार्या वेदिका तज्ज्ञैः शुभमङ्गलकर्मणि ॥ ७ ॥

सब मङ्गल कार्यों में कर्त्ता के हाथ से सोलह, बारह या दस हाथ चारों तरफ बराबर माप का मण्डप बनना चाहिये। जिसके बीच में एक सुन्दर वेदी, चार स्तम्भ और चारों दिशा अनेक रङ्ग से चित्रित शोभायमान कलश से युक्त रहे। द्वार, कूप, वृक्ष, खात, दीवार इत्यादि के वेध से रहित विद्वानों के बतलाये हुए मार्ग से बनाना श्रेष्ठ है ॥ ५–७ ॥

अथ मण्डपनिर्माणमुहूर्त्तः—

ऐशान्यां स्थापयेत्कुम्भं सिंहादित्रिभगे रवौ ।
वृश्चिकादित्रिभे वायौ नैर्ऋत्यां कुम्भतस्त्रिभे ।
वृषात्त्रये तथाऽऽग्नेय्यां स्तम्भखातं तथैव हि ॥ ८ ॥

सिंहादि तीन राशियों में सूर्य के रहने से ईशान कोण में स्तम्भ तथा कुम्भ का पहले स्थापना करना शुभ है। वृश्चिक आदि तीन राशियों में रहने से वायु कोण में, कुम्भ आदि तीन राशि में नैर्ऋत्य कोण में और वृष आदि तीन राशियों में सूर्य के होने से अग्नि कोण में स्तम्भ और घट का स्थापन शुभ है ॥ ८ ॥

विवाहनक्षत्रम्—

रोहिण्युत्तररेवत्यो मूलं स्वाती मृगो मघा।
अनुराधा च हस्तश्च विवाहे मङ्गलप्रदाः ॥ ९ ॥

रोहिणी, उत्तराभाद्रपदा, उत्तराषाढ़ा, उत्तराफाल्गुनी, रेवती, मूल, स्वाती, मृगशिरा, मघा, अनुराधा और हस्त ये नक्षत्र विवाह में मंगलदायक हैं ॥ ९ ॥

विवाहमासः—

मिथुनकुम्भमृगालिवृषाजगे मिथुनगेऽपि रवौ त्रिलवे शुचेः।
अलिमृगाजगते करपीडनं भवति कार्तिकपौषमधुष्वपि ॥ १० ॥

मिथुन, कुम्भ, मकर, वृश्चिक, वृष और मेष के सूर्य हों तो विवाह करना शुभ है, मिथुन के सूर्य में आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा से दशमी पर्यन्त श्रेष्ठ हैं, वृश्चिक के सूर्य हों तो कार्तिक में, मकर के सूर्य हों तो पौष में और मेष के सूर्य हों तो चैत्र में भी विवाह हो सकता है ॥ १० ॥

वैवाहिकमासफलम्—

माघे धनवती कन्या फाल्गुने सुभगा भवेत्।
वैशाखे च तथा ज्येष्ठे पत्युरत्यन्तवल्लभा ॥ ११ ॥
आषाढे कुलवृद्धिः स्यादन्ये मासाश्च वर्जिताः।
मार्गशीर्षमपीच्छन्ति विवाहे केऽपि कोविदाः ॥ १२ ॥

माघ में विवाह करने से कन्या धनवती होती है, फाल्गुन में सौभाग्यवती और वैशाख तथा ज्येष्ठ में पति की अत्यन्त प्रिया होती है एवं आषाढ़ में विवाह करने से कुल की वृद्धि होती है, अन्यान्य मास विवाह में वर्जित हैं परन्तु कोई-कोई विद्वानों ने विवाह में मार्गशीर्ष (अगहन) मास का भी ग्रहण किया है ॥ ११-१२ ॥

विवाहे गणनाविचारः—

वर्णो वश्यं तथा तारा योनिश्च ग्रहमैत्रकम्।
गणमैत्रं भकूटं च नाडी चैते गुणाधिकाः ॥ १३ ॥

वर्ण १, वश्य २, तारा ३, योनि ४, ग्रहमैत्री ५, गणमैत्री ६, भकूट ७ और नाडी ८ ये सब गुणों में एक से एक अधिक माने गये हैं ॥ १३ ॥

वर्णविज्ञानम्—

मीनालिकर्कटा विप्राः क्षत्रो मेषो हरिर्धनुः।
शूद्रो युग्मं तुलाकुम्भौ वैश्यः कन्या वृषो मृगः ॥ १४ ॥

मीन, वृश्चिक और कर्क ये ब्राह्मणवर्ण, मेष, सिंह और धनु ये क्षत्रियवर्ण, मिथुन, तुला और कुम्भ ये शूद्रवर्ण एवं कन्या वृष और मकर ये वैश्य-वर्ण हैं ॥ १४ ॥

एषां फलानि—

नोत्तमामुद्वहेत् कन्यां ब्राह्मणीं च विशेषतः ।
म्रियते हीनवर्णश्च ब्रह्मणा रक्षितो यदि ॥ १५ ॥

उत्तम वर्ण की और विशेषकर ब्राह्मणवर्ण की कन्या के साथ हीनवर्ण का पति विवाह न करे, अन्यथा यदि ब्रह्माजी रक्षा करें तो भी उस वर की मृत्यु हो जाती है ॥ १५ ॥

अन्यच्च—

विप्रवर्णे च या नारी शूद्रवर्णे च यः पतिः ।
ध्रुवं भवति वैधव्यं शक्रस्य दुहिता यदि ॥ १६ ॥

ब्राह्मणवर्ण की स्त्री के साथ शूद्रवर्ण के पति का विवाह किया जाय तो वह चाहे इन्द्र की कन्या क्यों न हो तथापि निश्चय विधवा होती है ॥ १६ ॥

वश्यकूटम्—

हित्वा मृगेन्द्रं नरराशिवश्याः
सर्वे तथैषां जलजास्तु भक्ष्याः ।
सर्वेऽपि सिंहस्य वशे विनाऽलिं-
ज्ञेयं नराणां व्यावहारतोऽन्यत् ॥ १७ ॥

सिंहराशि को छोड़कर अन्य सब मनुष्यराशि के वश्य हैं, जलचर सब इनके भक्ष्य हैं, वृश्चिक को छोड़ सिंह के सब वश्य हैं और अन्य का वश्य व्यवहार से जान लेना चाहिये ॥ १७ ॥

वश्यादिविवरणम्—

मेषवृषधन्विसिंहाश्चतुष्पदा मकरपूर्वभागश्च ।
कीटः कर्कटराशिः सरीसृपो वृश्चिकः कथितः ॥ १८ ॥
मकरस्य पश्चिमार्धं कुम्भो मीनश्च जलचरः ख्यातः ।
मिथुनतुलाधरकन्या द्विपदाख्या धनुः पूर्वभागश्च ॥ १९ ॥

मेष, वृष, धनु का उत्तरार्ध, सिंह और मकर का पूर्वार्ध ये चतुष्पाद हैं, कर्क की कीट संज्ञा है, वृश्चिक कीट है, मकर का उत्तरार्ध कुम्भ और मीन जलचर हैं मिथुन, तुला, कन्या का पूर्वार्द्ध ये द्विपाद (मानव) हैं ॥ १८-१९ ॥

ताराकूटम्—

कन्याद्धि(र्क्षा)द्वरभं यावत् कन्याभं वरभादपि ।
गणयेन्नवहृच्छेषे त्रिष्वद्रिभमसत्स्मृतम् ॥ २० ॥

कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्रपर्यन्त, वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिनकर उसमें नौ का भाग देने से ३, ५, ७ बचें तो अशुभ तारा होती है ॥ २० ॥

योनिविचारः—

अश्विन्यम्बुपयोर्हयोर्निगदितः स्वात्यर्कयोः कासरः
सिंहो वस्वजपाद्भयोः समुदितो याम्यन्त्ययोः कुञ्जरः ।
मेषो देवपुरोहितानलभयोः कर्णाम्बुनोर्वानरः
स्याद्वैश्वाभिजितोस्तथैव नकुलाश्चान्द्राब्जयोन्योरहिः ॥ २१ ॥
ज्येष्ठामैत्रभयो कुरंग उदितो मूलार्द्रयोः श्वा तथा
मार्जारोऽदितिसार्पयोरथ मघायोन्योस्तथैवोन्दुरुः ।
व्याघ्रो द्वीशभचित्रयोरपि च गौरर्यम्णबुध्न्यर्क्षयो-
र्योनिः पादगयोः परस्परमहावैर भयोन्योस्त्यजेत् ॥ २२ ॥

अश्विनी शतभिषा की अश्व योनि, स्वाती-हस्त की महिष, धनिष्ठा-पूर्वा भाद्रपदा की सिंह, भरणी-रेवती की हस्ती, पुनर्वसु-कृत्तिका की भेड़ा, श्रवण-पूर्वाषाढ़ा की वानर, उत्तराषाढ़ा-अभिजित की नकुल, मृगशिरा-रोहिणी की सर्प, ज्येष्ठा-अनुराधा की हरिण, मूल-आर्द्रा की श्वान (कुक्कुर), पुनर्वसु-आश्लेषा की बिलाव, मघा-पूर्वाफाल्गुनी की मूषक, विशाखा-चित्रा की व्याघ्र, उत्तराफाल्गुनी-उत्तराभाद्रपदा की गौ योनि हैं ॥ २१–२२ ॥

योनिवैरम्—

गोव्याघ्रं गजसिंहमश्वमहिषं श्वैणं च बभ्रूरगं
वैरं वानरमेषयोश्च सुमहत्तद्वद्विडालोन्दुरुः ।
लोकानां व्यवहारतोऽन्यदपि तज्ज्ञात्वा प्रयत्नादिदं
दम्पत्योर्नृपभृत्ययोरपि सदा वर्ज्यं शुभस्यार्थिभिः ॥ २३ ॥

गौ और व्याघ्र का, हाथी और सिंह का, अश्व और महिष का, श्वान और मृगका, सर्प और नेवले का, वानर और भेड़े का तथा मूस और बिलाव का परस्पर वैर है, स्त्री-पुरुषों तथा राजा-सेवकों में वैरयोनिका परित्याग कर देना चाहिये ॥ २३ ॥

ग्रहनिसर्गमैत्र्यादि—

शत्रू मन्दसितौ समश्च शशिजो मित्राणि शेषा रवे-
स्तीक्ष्णांशुर्हिमरश्मिजश्च सुहृदौ शेषाः समा शीतगो ।
जीवेन्दूष्णकराः कुजस्य सुहृदो ज्ञोऽरिः सितार्की समौ
मित्रे सूर्यसितौ बुधस्य हिमगुः शत्रुः समाश्चापरे ॥ २४ ॥

सूरेः सौम्यसितावरी रविसुतो मध्यो परे त्वन्यथा
सौम्यार्कौ सुहृदौ समौ कुजगुरू शुक्रस्य शेषावरी ।
शुक्रज्ञौ सुहृदौ समः सुरगुरुः सौरस्य चान्येऽरयो
ये प्रोक्ताः सुहृदस्त्रिकोणभवनात्तेऽमी मया कीर्तिताः ॥ २५ ॥

सूर्य के—चन्द्रमा, मंगल और वृहस्पति मित्र, बुध समान, शुक्र और शनैश्चर शत्रु हैं। चन्द्रमा के—सूर्य बुध-मित्र, मंगल वृहस्पति शुक्र और शनैश्चर समान और शत्रु कोई नहीं है। मंगल के—रवि, चन्द्रमा गुरु मित्र, शुक्र-शनि सम और बुध शत्रु हैं। बुध के—सूर्य-शुक्र मित्र, मंगल-गुरु शनि सम, चन्द्रमा शत्रु हैं। वृहस्पति के—सूर्य-चन्द्रमा-मंगल मित्र, शनि सम, बुध-शुक्र शत्रु हैं। शुक्र के—बुध-शनि मित्र, भौम-गुरु सम, रवि-चन्द्र शत्रु हैं। शनैश्चर के—बुध-शुक्र मित्र, गुरु सम और रवि-चन्द्रमा-मंगल शत्रु हैं॥ २४–२५ ॥

गणविचारः—

अश्विनीमृगरेवत्यो हस्तपुष्ये पुनर्वसुः ।
अनुराधा श्रुतिः स्वाती कथितो देवतागणः ॥ २६ ॥
तिस्रः पूर्वाश्चोत्तराश्च तिस्रोऽप्यार्द्रा च रोहिणी ।
भरणी च मनुष्याख्यो गणश्च कथितो बुधैः ॥ २७ ॥
कृत्तिका च मघाऽश्लेषा विशाखा शततारका ।
चित्रा ज्येष्ठा धनिष्ठा च मूलं रक्षोगणः स्मृतः ॥ २८ ॥

अश्विनी, मृगशिरा, रेवती, हस्त, पुष्य, पुनर्वसु, अनुराधा, श्रवण और स्वाती ये नक्षत्र देवतागण, पूर्वाभाद्रपदा, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपदा उत्तराषाढ़ा, उत्तराफाल्गुनी, आर्द्रा, रोहिणी और भरणी ये नक्षत्र मनुष्यगण, कृत्तिका, मघा, आश्लेषा, विशाखा, शतभिषा, चित्रा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा और मूल ये नक्षत्र राक्षसगण हैं॥ २६–२८ ॥

गणफलम्—

स्वगणे परमा प्रीतिर्मध्यमा देवमर्त्ययोः ।
मर्त्यराक्षसयोर्मृत्युः कलहो देवरक्षसाम् ॥ २९ ॥

यदि स्त्री और पुरुष का एक ही गण हो तो परम प्रीति होती है, देवता और मनुष्य में मध्यम प्रीति, मनुष्य और राक्षस गण हो तो मृत्यु एवं देवता और राक्षस गण हो तो कलह (खटपट) होती हैं ॥ २९ ॥

गणपरिहारः—

रक्षोगणः पुमांश्चेत् स्यात् कन्या भवति मानवी ।
केऽपीच्छन्ति तदोद्वाहं व्यस्तं कोऽपीह नेच्छति ॥ ३० ॥

पुरुष (वर) यदि राक्षस गण और कन्या मनुष्यगण हो तो ऐसे विवाह को कोई-कोई आचार्य चाहते हैं और विपरीत आने पर कोई भी नहीं चहता ॥ ३० ॥

भकूटम्—

मृत्युः षडष्टके ज्ञेयोऽपत्यहानिर्नवात्मजे ।
द्विर्द्वादिशे दरिद्रत्वं द्वयोरन्यत्र सौख्यकृत् ॥ ३१ ॥

कन्या अथवा वर की राशि से वर या कन्या की राशि यदि ६, ८ हो तो मृत्यु, ९, ५, ३ हानि, २, १२ हो तो दरिद्रता होती है। अन्यत्र सौख्य होता है ॥ ३१ ॥

नाडीकूटम्—

ज्येष्ठारौद्रार्यमाम्भः पतिभयुगयुगं दास्रभं चैकनाडी
पुष्येन्दुत्वाष्ट्रमित्रान्तकवसुजलभं योनिबुध्न्ये च मध्या ।
वाय्वग्नि यालविश्वोडुयुगयुगमथो पौष्णभं चापरास्या-
द्दम्पत्योरेकनाड्यां परिणयनमसन्मध्यनाड्यां हि मृत्युः ॥ ३२ ॥

ज्येष्ठा, मूल, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, आर्द्रा, पुनर्वसु, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा और अश्विनी की आदि नाड़ी है। पुष्य, मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, भरणी, धनिष्ठा, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपदा की मध्यनाड़ी है। स्वाती, विशाखा, कृत्तिका, रोहिणी, आश्लेषा, मघा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण और रेवती इनकी अन्त्यनाड़ी है। वर-कन्या की एक नाड़ी हो तो विवाह अशुभ है और मध्य हो तो मृत्यु होती है ॥ ३२ ॥

नाडीकूटफलम्—

एकनाडीस्थनक्षत्रे दम्पत्योर्मरणं ध्रुवम् ।
सेवायां च भवेद्धानिर्विवाहे प्राणनाशनः ।। ३३ ।।

स्त्री-पुरुषों की एक नाड़ी हो तो निश्चय मरण, सेवा में हानि और विवाह में प्राणों का नाश होता है ।। ३३ ।।

आदिनाडी वरं हन्ति मध्यनाडी च कन्यकाम् ।
अन्त्यनाड्यां द्वयोर्मृत्युर्नाडीदोषं त्यजेद्बुधः ।। ३४ ।।

आदि नाड़ी वर, मध्यनाड़ी कन्या और अन्त्यनाड़ी दोनों का नाश करती है, इससे नाड़ी-दोष विद्वानों को त्याग देना चाहिये ।। ३४ ।।

नाड़ीदोषपरिहारः—

एकनक्षत्रजातानां नाडीदोषो न विद्यते ।
अन्यर्क्षप्रतिवेधे तु विवाहो वर्जितः सदा ।। ३५ ।।

वर-कन्या का एक ही नक्षत्र हो तो नाड़ी दोष नहीं माना जाता है, अन्य नक्षत्र हो तो विवाह सर्वथा वर्जित है ।। ३५ ।।

राश्यैक्ये भिन्नमृक्षं चेद्भैक्ये राशिद्वयं तथा ।
पादभेदेऽपि नाडीनां गणानां च न दुष्टता ।। ३६ ।।

राशि की एकता में भिन्न नक्षत्र और नक्षत्र के एक होने पर राशि की भिन्नता अथवा एक नक्षत्र में भी चरण भेद हो तो नाड़ी और गण का दोष नहीं माना जाता है ।। ३६ ।।

वर्णकूटम्—

अकचटतपयशवर्गाः खगेशमार्जारसिंहशुनाम् ।
सर्पाखुमृगावीनां निजपञ्चमवैरिणामष्टौ ।। ३७ ।।

अवर्ग का गरुड़, कवर्ग का बिलाव, चवर्ग का सिंह, टवर्ग का श्वान, तवर्ग का सर्प, पवर्ग का मूषक, यवर्ग का मृग और शवर्ग का मेढ़ा वर्ग है और वर्ग से पाँचवाँ वैरी होता है ।। ३७ ।।

स्ववर्गात् पञ्चमः शत्रुश्चतुर्थो मित्रसंज्ञकः ।
उदासीनस्तृतीयः स्याद्वर्गभेदस्त्रिधोच्यते ।। ३८ ।।

अपने वर्ण से पाँचवाँ शत्रु, चौथा मित्र और तीसरा उदासीन होता है इस प्रकार तीन भांति का वर्ग-भेद कहा गया है ।। ३८ ।।

राशिभेदः—

वरस्य पञ्चमे कन्या कन्याया नवमे वरः ।
एतत् त्रिकोणकं ग्राह्यं पुत्रपौत्रसुखावहम् ॥ ३९ ॥

वर की राशि से यदि कन्या की राशि पञ्चम और कन्या से वर की राशि नवम हो तो पुत्र-पौत्र और सुख का देनेवाला त्रिकोण योग होता है ॥ ३९ ॥

षडष्टके भवेन्मृत्युर्यत्नतस्तत् परित्यजेत् ।
द्विर्द्वादशे च दारिद्र्यं नवमे पञ्चमे कलिः ॥ ४० ॥

स्त्री पुरुष की राशि परस्पर छठी आठवीं राशि हो तो मृत्यु होती है अतएव यत्न से उसका त्याग कर देना चाहिये। दूसरी वारहवीं में दारिद्रय, नौवीं और पाँचवीं में कलह होता है ॥ ४० ॥

वर्जितसूर्यः—

अष्टमे च चतुर्थे च द्वादशे च दिवाकरे ।
विवाहितो वरो मृत्युं प्राप्नोत्यत्र न संशयः ॥ ४१ ॥

वर की राशि से आठवें, चौथे या वारहवें सूर्य में विवाह किया जाय तो निःसन्देह वर की मृत्यु होती है ॥ ४१ ॥

ग्राह्यसूर्यः—

एकादशस्तृतीयो वा षष्ठश्च दशमोऽपि वा ।
वरस्य शुभदो नित्यं विवाहे दिननायकः ॥ ४२ ॥

ग्यारहवें, तीसरे, छठे और दशवें सूर्य विवाह में वर के लिए बहुत शुभ हैं ॥ ४२ ॥

सामान्यसूर्यः—

जन्मन्यथ द्वितीयो वा पञ्चमे सप्तमेऽपि वा ।
नवमे च दिवानाथे पूजया पाणिपीडनम् ॥ ४३ ॥

जन्म के (पहिले), द्वितीय, पाँचवें या सातवें एवं नवें सूर्य हो तो विवाह के समय पूजन करा देने से शुभ होते हैं ॥ ४३ ॥

रविपरिहारः—

गर्गाङ्गिरोगौतमकश्यपाद्याः पराशराद्या मुनयो वदन्ति ।
द्वितीयपुत्रांकगतो दिवाकरस्त्रयोदशाब्दात्परतः शुभावहः ॥ ४४ ॥

गर्ग, अंगिरा, गौतम, कश्यप और पराशर आदि मुनियों की आज्ञा है कि दूसरे, पाँचवें और नवें स्थान के सूर्य तेरह वर्ष की अवस्था के अनन्तर शुभ हैं ॥ ४४ ॥

अथ यात्राप्रकरणम्

दिशा-विदिशा च—

भास्कराभिमुखैर्ज्ञेया दिशोऽथ विदिशः स्फुटाः ।
सम्मुखे पूर्वदिग् ज्ञेया पश्चाज्ज्ञेया च पश्चिमा ।
उत्तरा वामभागे या दक्षिणे सा च दक्षिणा ।। १ ।।
अग्निकोणस्तथाग्नेयी पूर्वदक्षिणमध्यगा ।
नैर्ऋतो निर्ऋतेः कोणो दक्षिणापरमध्यगा ।। २ ।।
पश्चिमोत्तरमध्यस्था वायवी वायुकोणकः ।
ईशानकोण ऐशानी विदिक् पूर्वोत्तरान्तरे ।। ३ ।।

पूर्व आदि चार दिशा और आग्नेय आदि चार विदिशा (कोण) हैं, जिधर प्रातः सूर्योदय होता है उधर पूर्व है । पूर्व की ओर मुख करके खड़े होने वाम भाग में उत्तर, दाहिनी ओर दक्षिण और पीछे पश्चिम दिशा होती है । पूर्व और दक्षिण के बीच के कोण को आग्नेय, दक्षिण और पश्चिम के मध्यकोण को नैर्ऋत्य, पश्चिम और उत्तर के मध्यकोण को वायव्य और उत्तर तथा पूर्व के मध्य कोण को ऐशान कोण कहते हैं ।। १–३ ।।

दिक्शूलविचारः—

शनौ चन्द्रे त्यजेत्पूर्वां दक्षिणां हि दिशं गुरौ ।
सूर्ये शुक्रे पश्चिमां च बुधे भौमे तथोत्तराम् ।। ४ ।।

शनैश्चर सोमवार को पूर्व दिशा, वृहस्पति के दिन दक्षिण, रविवार और शुक्र के दिन पश्चिम, बुध और मंगल के दिन उत्तर यात्रा न करे ।। ४ ।।

विदिक्शूलविचारः—

ऐशान्यां ज्ञे शनौ शूलमाग्नेय्यां गुरुसोमयोः ।
वायव्यां भूमिपुत्रे तु नैर्ऋत्यां सूर्यशुक्रयोः ।। ५ ।।

बुध और शनि के दिन ईशान कोण में, सोमवार और वृहस्पति के दिन आग्नेय कोण में, मंगलवार को वायव्य कोण में रवि और शुक्र को नैर्ऋत्य कोण में दिक्शूल रहता है । सम्मुख दिक्शूल गमन निषेध है ।। ५ ।।

दिक्शूलपरिहारः—

सूर्यवारे घृतं पीत्वा गच्छेत्सोमे पयस्तथा ।
गुडमङ्गारवारे तु बुधवारे तिलानपि ।। ६ ।।

गुरुवारे दधि प्राश्य शुक्रवारे यवानपि ।
माषान्भुक्त्वा शनौ वारे शूलदोषोपशान्तये ॥ ७ ॥

दिक्शूल में आवश्यक कार्यवश दोष की शान्ति के लिए रविवार को घृत, सोमवार को दूध, मंगल को गुड़, वुध को तिल, वृहस्पति को दही, शुक्र को यव और शनैश्चर को उड़द भक्षण कर यात्रा करनी चाहिये ॥ ६–७ ॥

अर्घविचार:—

संक्रान्तिऋक्षं तिथिवारमिश्रं सप्ताहतं पावकभक्तशेषम् ।
समे समर्घं विषमे त्वनर्घं शून्ये महार्घं मुनयो वदन्ति ॥ ८ ॥

संक्रान्ति का नक्षत्र, तिथि और वार इन सवको मिलाकर सात (७) से गुणा कर तीन से भाग दे । यदि सम अंक वचे तो अन्न का भाव तेज, विषम वचे तो सस्ता और शून्य वचे तो अतीव महँगा ऐसा मुनि लोग वताते हैं ॥ ८ ॥

घातचन्द्रमा—

चन्द्रभूतग्रहा नेत्रा रसा दिग्वह्निसागराः ।
वेदाः सिद्धिशिवाऽऽदित्या मेषादौ घातचन्द्रमाः ॥ ९ ॥

वह चन्द्रमा मेषादि राशियों के क्रम से घातक चन्द्रमा होता है । राशि को जैसे मेष को प्रथम, वृष को पंचम, मिथुन को नवम, कर्क को दूसरा, सिंह को छठा, कन्या को दसवाँ, तुला को तीसरा, वृश्चिक को सातवाँ, धनु को चौथा, मकर को आठवाँ, कुम्भ को ग्यारहवाँ और मीन को वारहवाँ चन्द्रमा घातक है ॥ ९ ॥

घातकचन्द्रफलम्—

रोगे मृत्यू रणे भङ्गो यात्राकाले च बन्धनम् ।
विवाहे विधवा नारी घातचन्द्रफलं स्मृतम् ॥ १० ॥

चन्द्र घात के दिन रोग हो तो मृत्यु, युद्ध करने से हार; यात्रा करने से बन्धन और विवाह करने से स्त्री विधवा होती है ॥ १० ॥

योगिनीविचार:—

प्रतिपत्सु नवम्यां च पूर्वस्यां दिशि योगिनी ।
अग्निकोणे तृतीयायामेकादश्यां तथैव च ॥ ११ ॥
त्रयोदश्यां च पञ्चम्यां दक्षिणस्यां शिवप्रिया ।
द्वादश्यां च चतुर्थ्यां वै नैऋत्यां दिशि योगिनी ॥ १२ ॥

षष्ठ्यां चैव चतुर्दश्यां योगिनी पश्चिमां गता
पूर्णिमायां च सप्तम्यां वायुकोणे तु पार्वती ॥ १३ ॥
दशम्यां च द्वितीयायामुत्तरस्यां शिवा भवेत् ।
ऐशान्यां दर्श अष्टम्यां योगिनीं समुदाहृता ॥ १४ ॥

योगिनी प्रतिपदा और नवमी को पूर्व रहती है, तीज और एकादशी को अग्नि कोण, तेरस और पञ्चमी को दक्षिण, द्वादशी और चौथ को नैर्ऋत्य, चौदश और छठ को पश्चिम, पूर्णिमा और सप्तमी को वायु, दशमी और द्वितीया को उत्तर, अमावस और अष्टमी को ईशान कोण में योगिनी निवास करती है ॥ ११–१४ ॥

योगिनीफलम्—

योगिनी सुखदा वामे पृष्ठे वाञ्छितदायिनी ।
दक्षिणे धनहन्त्री च सम्मुखे मरणप्रदा ॥ १५ ॥

वाम भाग की योगिनी सुखदायिनी, पीछे की अभीष्ट सिद्ध देनेवाली, दाहिनी धनविनाशिनी और सम्मुख मरणप्रदा होती है । अन्यत्र सम्मुखवामगा न शुभदा—ऐसा पाठ है ॥ १५ ॥

भद्राफलम्—

स्वर्गे भद्रा शुभं कुर्यात् पाताले च धनागमम् ।
मृत्युलोकगता भद्रा सर्वकार्यविनाशिनी ॥ १६ ॥

स्वर्ग में भद्रा हो तो शुभकार्य, पाताल में हो तो धन का लाभ और जो भद्रा मृत्युलोक में हो तो समस्त कार्य को नाश करती है ॥ १६ ॥

सम्मुखे मृत्युलोकस्था पाताले च ह्यधोमुखी ।
उर्ध्वस्था स्वर्गगा भद्रा सम्मुखे मरणप्रदा ॥ १७ ॥

मृत्युलोक की भद्रा सम्मुख, पाताल लोक की अधोमुखी और स्वर्ग की ऊर्ध्वमुखी होती है । सम्मुख भद्रा मरण करती है ॥ १७ ॥

भद्रायां यात्रानिषेधः—

भद्रामुखेषु यो याति क्रोशमेकं नरो यदि ।
पुनरागमनं नास्ति सागरात्सरितो यथा ॥ १८ ॥

जो व्यक्ति भद्रा के सम्मुख एक कोश भी जाता है वह पुनः लौटता नहीं है, जैसे समुद्र में जाकर नदी नहीं लौटती ॥ १८ ॥

यात्रामुहूर्ताः—

अनुराधश्रवो हस्तो मृश्नाश्वो दितिद्वयम् ।
धनिष्ठा रेवती चैव यात्रायां शुभदा सदा ॥ १९ ॥
मघोत्तरा विशाखा च सर्पश्चान्ये च मध्यमा ।
षष्ठी रिक्ता द्वादशी च पर्वाणि च विवर्जयेत् ॥ २० ॥
लग्ने कन्या मन्मथश्च वृषभश्च तुलाधरः ।
यात्राचन्द्रबले लग्ने शकुनं च विचारयेत् ॥ २१ ॥
सर्वदिग्गमने हस्तः पूषां च श्रवणो मृगः ।
सर्वसिद्धिकरः पुष्यो विद्यारम्भे गुरुर्यथा ॥ २२ ॥

अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती ये नक्षत्र फलयात्रा में उग्र हैं। उत्तराभाद्रपदा, विशाखा और आश्लेषा ये नक्षत्र यात्रा में अशुभ हैं और अन्य नक्षत्र मध्यम हैं। षष्ठी, रिक्ता (४।९।१४) और पर्व दिन यात्रा में इनका परित्याग कर देना चाहिये। कन्या, मिथुन, वृष, तुला ये लग्न यात्रा में शुभ हैं। चन्द्रमा लग्न वल होने पर भी यात्रा शकुन विचार करना चाहिये। हस्त रेवती, श्रवण, मृगशिरा ये नक्षत्र सर्वत्र सर्व दिशा की यात्रा में शुभ हैं। पुष्य नक्षत्र सब शुभ कामों में इस प्रकार सिद्धिदाता है, जैसे विद्या के प्रारम्भ में गुरु ॥ १९-२२ ॥

यात्रायां वर्जितानि—

त्र्यहं क्षीरं च पञ्चाहं क्षौरं सप्तदिनं रतम् ।
वर्ज्यं यात्रादिनात् पूर्वमशक्तस्तद्दिने रतम् ॥ २३ ॥

यात्रा करने से तीन दिन प्रथम दूध, पाँच दिन पहले क्षौर (हजामत), सात दिन पहले स्त्री-प्रसंग का त्याग करें और अशक्त हो तो केवल यात्रा के दिन ही त्याग करें ॥ २३ ॥

पितापुत्रैर्न गन्तव्यं न गच्छेत्सोदरद्वयम् ।
नवस्त्रीभिर्न गन्तव्यं न गच्छेद् ब्राह्मणत्रयम् ॥ २४ ॥

पिता और पुत्र को एक साथ नहीं जाना चाहिये, दो भ्राता, नव स्त्री, तीन ब्राह्मणों को एक-एक साथ यात्रा नहीं करनी चाहिये।

पर्वदिनानि—

चतुर्दश्यष्टमी कृष्णा अमावस्या च पूर्णिमा ।

एतानि पञ्च पर्वाणि रविसंक्रान्तिकं दिनम् ॥ २५ ॥

चतुर्दशी, कृष्णपक्ष की अष्टमी, अमावस्या, पूर्णिमा और सूर्य की संक्रान्ति का दिन ये पाँच पर्व कहलाते हैं ॥ २५ ॥

यात्रायां शुक्रफलम्—

दक्षिणेऽसुखदः शुक्रः सम्मुखे हन्ति लोचनम् ।
वामे पृष्ठे शुभो नित्यं रोधयेदस्तगः शुभः ॥ २६ ॥

यात्रा के समय शुक्र दक्षिण (दाहिना) हो तो दुःख देता है, सम्मुख हो तो नेत्रों में विकार करता है, वाम (बायाँ) और पीछे नित्य शुभ है, अस्त हुआ शुक्र शुभ का अवरोध करता है ॥ २६ ॥

कालयोगः—

अर्कोत्तरे वायुदिशां च सोमे भौमे प्रतीच्यां बुधे च नैर्ऋते ।
याम्ये गुरौ वह्निदिशां च शुक्रे मन्दे च पूर्वे प्रवदन्ति कालम् ॥२७॥

रविवार को उत्तर, सोमवार को वायव्य, मङ्गल को पश्चिम, बुध को नैर्ऋत, गुरुवार को दक्षिण, शुक्र को अग्निकोण और शनिवार को पूर्व में काल रहता है ॥ २७ ॥

अथ वधूप्रवेशः

तत्र समयनियमः—

आरभ्योद्वाहदिवसात् षष्ठे वाप्यष्टमे दिने ।
वधूप्रवेशः सम्पत्त्यै दशमेऽथ समे दिने ॥ १ ॥

विवाह के दिन से सोलह दिन के भीतर छठा, आठवाँ, दशवाँ या सम दिन जैसे २–४ इत्यादि दिनों में वधूप्रवेश शुभदायक है ॥ १ ॥

अथ वधूप्रवेशमुहूर्त्तः—

पौष्णात् कभाच्च श्रवणाच्च युग्मे हस्तत्रये मूलमघोत्तरासु ।
पुष्ये च मैत्रे च वधूप्रवेशो रिक्तेतरे व्यर्ककुजे च शस्तः ॥ २ ॥

रेवती, अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, धनिष्ठा, हस्त, चित्रा, स्वाती, मूल, मघा, तीनों उत्तरा, पुष्य और अनुराधा इन नक्षत्रों में, रिक्ता वर्जित तिथि, रवि और मङ्गल छोड़कर शेष दिनों में वधूप्रवेश शुभ है ॥ २ ॥

अथ द्विरागमनम्

अथ द्विरागमनशब्दार्थः—

विवाहसमये बाला व्रजेद्भर्तृगृहं प्रति ।
पुनस्तातगृहाद्यात्रा तद्द्विरागमनं स्मृतम् ॥ १ ॥

विवाहके वाद स्वामी के घर जाना वधूप्रवेश है, उसके बाद पिता के घर से यात्रा का नाम द्विरागमन है ॥ १ ॥

अथ द्विरागमने वर्षव्यवस्था—

धनं हानिः सुखं नाशो भोगो वैरं ततः सुखम् ।
प्रथमाब्दात् फलं ज्ञेयं क्रमाद्वध्वा द्विरागमे ॥ २ ॥
श्वश्रूं हन्त्यष्टमे वर्षे श्वशुरं च दशाब्दके ।
सम्प्राप्ते द्वादशे वर्षे पतिं हन्ति द्विरागमे ॥ ३ ॥

विवाह से लेकर प्रथम आदि वर्षों में द्विरागमन होने से क्रमशः धन हानि, सुख नाश, भोग, वैर और सुख ये फल होते हैं तथा आठवें वर्ष में सास की, दसवें वर्ष में श्वशुर की और बारहवें वर्ष में द्विरागमन होने से स्वामी की मृत्यु होती है ॥ २–३ ॥

अथ द्विरागमने मासाः—

वैशाखे सुभगा प्रभूतधनिनी मार्गे च पुत्रान्विता
फाल्गुन्ये पतिवल्लभा प्रियजने नित्यं प्रिया पुत्रिणी ।
वन्ध्या दुर्भगनिर्धना विरहिणी सोद्वेगिता नित्यशो
नूनं देवसुतापि दुःखमतुलं प्राप्नोति मासान्तरे ॥ ४ ॥

वैशाख में सौभाग्यवती तथा धन संयुक्ता होती है और अग्रहण में बहुपुत्रा, फाल्गुन में पतिप्रिया, बन्धुवर्ग में प्रेम करने वाली और पुत्रवती होती है। इससे अन्य महीनों में द्विरागमन होने से वन्ध्या, दुर्भगा, दरिद्रा, स्वामी से त्यक्ता, उद्वेगयुक्ता तथा स्वामी और पुत्र से बड़े-बड़े कष्ट पाने वाली होती है ॥ ४ ॥

अथ द्विरागमनमुहूर्त्तः—

मृदुध्रुवक्षिप्रचरेऽपि मूले तिथौ गमोक्ते शुभवासरे च ।
रवीज्यशुद्धे समये वधूनां द्विरागमः शुक्लदले प्रशस्तः ॥ ५ ॥

मृदु, ध्रुव, क्षिप्र और चरसंज्ञक, मूल इन नक्षत्रों में, यात्रा में कहे हुए तिथि तथा शुभ दिन में, रवि और बृहस्पति के शुद्ध रहने पर शुक्ल पक्ष में द्विरागमन करना श्रेष्ठ है ॥ ५ ॥

—:०:—

द्व्यङ्गप्रकरणम्

अथ द्विरागमनानन्तरयात्रा—

याते द्विरागमे पत्न्याः पुनः पतिगृहे गमः ।
पितृगेहस्थितायाश्च स द्व्यङ्ग इह कथ्यते ॥ १ ॥

वैधव्यमग्रतो राहुर्दक्षिणे सुतहा भवेत् ।
वामे पृष्ठे शुभो नित्यं तृतीयगमने स्त्रियः ॥ २ ॥

द्विरागमन में पतिगृह में गईं हुई कन्या को पुनः पिता के गृह से स्वामी के घर जाना द्व्यङ्ग कहलाता है । जिस प्रकार द्विरागमन में दक्षिण और सम्मुख शुक्र रहने से अशुभदायक होता है, उसी तरह द्व्यङ्ग में राहु को भी जानना चाहिए । सम्मुख राहु में जाने से विधवा और दक्षिण राहु में जाने से पुत्र की हानि कही गई है और वाम तथा पृष्ठ की तरफ राहु के रहने से यात्रा शुभ है, यह विचार स्त्री की तृतीय बार की यात्रा में करना चाहिए । त्रैमासिक राहु गृहकार्य में और युद्ध-यात्रा में अर्द्धप्रहरात्मक एवं द्व्यङ्ग कार्य में मासिक राहु का विचार पण्डितों ने लिखा है ॥ १–२ ॥

अथ द्व्यङ्गमुहूर्त्तः—

मेषोक्षयुग्मकर्केषु सत्रिकोणेषु तिष्ठति ।
राहुः पूर्वादिकाष्ठासु नेष्टः सम्मुखदक्षिणे ॥ ३ ॥
सुतिथौ गुणवल्लग्ने राहौ वामे च पृष्ठगे ।
यात्रोक्तमासदिवसे यायात्पतिनिकेतनम् ॥ ४ ॥
आदित्यमृगहस्तेज्यपौष्णमैत्राश्विनीषु च ।
गोविन्दवसुमूलेषु द्व्यङ्गः सम्पत्प्रदायकः ॥ ५ ॥

मेष, वृष, मिथुन और कर्क इन राशियों में और इनसे नवम तथा पञ्चम राशि में राहु पूर्वादि दिशा में वास करता है । शुभ तिथि में तथा शुभ लग्न में राहु के वाम या पृष्ठ रहने पर यात्रा में कहे हुए मास, दिन, तिथि आदि विहित काल में तृतीय बार स्वामी के घर जाना स्त्रियों के लिए शुभप्रद है । पुनर्वसु, मृगशिरा, हस्त, पुष्य, रेवती, अनुराधा, अश्विनी, श्रवण, धनिष्ठा और मूल इन नक्षत्रों में तृतीय बार यात्रा स्त्रियों के लिए सम्पत्तिदायक है ॥ ३–५ ॥

मिश्रप्रकरणम्

अथ नववधूपाकारम्भदिनम्—

मृगोत्तरातिष्यकृशानुशाक्रे श्रुतित्रये ब्रह्मद्विदैवपौष्णे ।
शुभे तिथौ व्याररवौ प्रकुर्यान्नवा वधूर्नूतनपाककर्म ॥ १ ॥

मृगशिरा, तीनों उत्तरा, पुष्य, कृत्तिका, ज्येष्ठा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रोहिणी, विशाखा और रेवती इन नक्षत्रों में, शुभ तिथि में और मङ्गल तथा रविवार को छोड़कर शेष दिनों में नववधू को सर्वप्रथम पाक करना (रसोई करना) श्रेष्ठ है ॥ १ ॥

अथ स्त्रीणां केशबन्धनम्—

वातोत्तराश्रवणशङ्करवाजिमूल-
पुष्यादितीन्दुकरपौष्णपुरन्दरेषु ।
पक्षे सिते रविनिशाकरसौम्यवारे
धम्मिल्लबन्धनविधिः शुभदो मृगाक्ष्याः ॥ २ ॥

स्वाती, तीनों उत्तरा, श्रवण, आर्द्रा, अश्विनी, मूल, पुष्य, पुनर्वसु, मृगशिरा, हस्त, रेवती और ज्येष्ठा इन नक्षत्रों में, शुक्ल पक्ष में, रवि, सोम और शुभ वारों में स्त्रियों के लिए केशवन्धन (चोटी मढ़वाना) शुभ है ॥ २ ॥

अथ अलङ्करणधारणम्—

चित्राविशाखापवनानुराधावस्वश्विनीभास्कररेवतीषु ।
आदित्यशुक्रेन्दुजजीववारे लग्ने स्थिरे स्त्री कनकादि दध्यात् ॥ ३ ॥

चित्रा, विशाखा, स्वाती, अनुराधा, धनिष्ठा, अश्विनी, हस्त और रेवती इन नक्षत्रों में, सूर्य, शुक्र, बुध और बृहस्पति दिन में तथा स्थिर लग्न में स्त्री के लिए सुवर्ण आदि अलङ्करण (जेवर) धारण करना शुभ है ॥ ३ ॥

अथ चुल्हिकास्थापनम्—

तुरगयमविशाखाब्राह्मसौम्योत्तरेषु
ज्वलनजलधनिष्ठामूलशूलायुधेषु ।
रविशनिकुजवारे चुल्हिका स्थापनीया
ज्वलति सुचिरधौरव्यञ्जनस्वादुकर्त्री ॥ ४ ॥

अश्विनी, भरणी, विशाखा, रोहिणी, आश्लेषा, तीनों उत्तरा, कृत्तिका, पूर्वाषाढ़ा, धनिष्ठा, मूल और शतभिषा इन नक्षत्रों में, रवि, शनि तथा कुज दिनों में चुल्हिका स्थापन करने से चुल्हिका ठीक से जलती है और भोजन स्वादिष्ट बनता है ॥ ४ ॥

अथ चुल्हिकोपरि मृद्भाण्डस्थापनम्—

चुल्हिकोपरि मृद्भाण्डं स्थापयेन्नैव कामिनी ।
भृगुचन्द्रमसोर्वारे, स्नायान्नैव च वारुणे ॥ ५ ॥

शुक्र और चन्द्रवार को कामिनी (स्त्री) चूल्हे पर मृद्भाण्ड (मिट्टी के बरतन) का स्थापन न करे और शतभिषा नक्षत्र में स्नान न करे ॥ ५ ॥

अथ शतभिषायां स्नाने परिहारः—

चन्द्रे शतभिषां प्राप्ते नारी न स्नानमाचरेत् ।
भ्रमात् स्नाता तदा पुष्पगन्धाद्यैः पूजयेत्पतिम् ॥ ६ ॥

शतभिषा नक्षत्र में चन्द्रमा हो तो स्त्री स्नान न करे। यदि भ्रम से स्नान करे तो पुष्प, चन्दन से अपने स्वामी की पूजा करे ॥ ६ ॥

अथ पुंसां नूतनवस्त्रधारणमुहूर्त्तः—

ब्रह्मानुराधवसुपुष्यविशाखहस्तचित्रोत्तराश्विपवनादितिरेवतीषु ।
जन्मर्क्षजीवबुधशुक्रदिनोत्सवादौ धार्यं नवं वसनमीश्वरविप्रतुष्ट्यै ॥ ७ ॥

रोहिणी, अनुराधा, धनिष्ठा, पुष्य, विशाखा, हस्त, चित्रा, तीनों उत्तरा, अश्विनी, स्वाती, पुनर्वसु, रेवती और जन्म के नक्षत्र, इन नक्षत्रों में वृहस्पति, बुध और शुक्र दिनों में तथा यज्ञादि उत्सव कार्य में राजा और ब्राह्मण के प्रसन्नार्थ पुरुष नवीन वस्त्र धारण करें ॥ ७ ॥

अथ स्त्रीणां नूतनवस्त्रधारणम्—

धनिष्ठा रेवती चैव तथा हस्तादिपञ्चकम् ।
अश्विनी गुरुशुक्राणां स्त्रीणां वस्त्रस्य धारणम् ॥ ८ ॥

धनिष्ठा, रेवती, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा और अश्विनी नक्षत्रों में, बृहस्पति और शुक्र दिन में स्त्री के लिए नूतन वस्त्र-धारण करना श्रेष्ठ है ॥ ८ ॥

अथ स्त्रीणां भूषणधारणे विशेषः—

नासत्यपौष्णवसुभे करपञ्चके च मार्त्तण्डभौमगुरुदानवमन्त्रिवारे ।
लाक्षासुवर्णमणिविद्रुमशङ्खदन्तरक्ताम्बराणि विभृयात् [illegible] ॥ ९ ॥

अश्विनी, रेवती, धनिष्ठा, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा और अनुराधा नक्षत्रों में, सूर्य, मङ्गल, बृहस्पति, शुक्र वारों में स्त्रियों के लिए [illegible]

(लाह की चूड़ी), सुवर्ण की चूड़ी वगैरह, मणि (रत्नजड़ित भूषण), मूङ्गा, शङ्ख-चूड़ी, लाल वस्त्र आदि धारण करना शुभ है।

अथ सूचीकर्म मुहूर्त:—

चित्रादित्यश्विनीमैत्रश्रविष्ठासु शुभे दिने।
सूचीकर्मविधानं च शुभं प्रोक्तं मनीषिभिः ॥

चित्रा, पुनर्वसु, अश्विनी, अनुराधा और श्रवण, इन नक्षत्रों में, शुभ दिनों में सूचीकर्म करना या सीखना विद्वानों ने शुभ वतलाया है।

अथ वस्त्रक्षालनम्—

शनिभौमदिने श्राद्धे कुहू षष्ठी निरंशके।
वस्त्राणां क्षारसंयोगो दहत्यासप्तमं कुलम् ॥ १० ॥

शनि, मङ्गल और माता-पिता के श्राद्ध दिन, अमावास्या, षष्ठी और नवमी तिथियों में वस्त्र धुलवाना वर्जित है। धुलवाने से सात पुरुष तक पितृगणों को दग्ध करता है ॥ १० ॥

अथ कृषिप्रकरणम्, तत्रादौ हलप्रवहणम्—

सप्तम्येकादशी चैव पञ्चमी दशमी तथा।
त्रयोदशी तृतीया च प्रशस्ता हलकर्मणि ॥ ११ ॥
मृदुध्रुवक्षिप्रचरेषु मूलमघाविशाखासहितेषु भेषु।
हलप्रवाहं प्रथमं विदध्यान्नीरोगमुष्कान्वितसौरभेयैः ॥ १२ ॥
विष्कुम्भवज्रव्यतिपातगण्डातिगण्डमन्दारदिनं विहाय।
सम्पूज्य दूर्वाक्षतगन्धपुष्पैर्हलं विदध्यात् कृषिकर्मकर्त्ता ॥ १३ ॥

सप्तमी, एकादशी, पञ्चमी, त्रयोदशी और तृतीया ये तिथियाँ हल कर्म में श्रेष्ठ हैं एवं मृदु, ध्रुव, क्षिप्र और चरसंज्ञक, मूल, मघा और विशाखा इन नक्षत्रों में नीरोग बैल से प्रथम बार हल चलवाना शुभ है। विष्कुम्भ, वज्र, व्यतिपात, गण्ड और अतिगण्ड योग, शनि और मङ्गल को छोड़कर शेष दिनों में दूर्वा, अक्षत, पुष्प और चन्दन से पूजन करके हल चलाना श्रेष्ठ कहा गया है ॥ ११–१३ ॥

अथ बीजवपनम्—

त्रिभिस्त्रिभिस्त्रिभिः पञ्च त्रिभिः पञ्च त्रिभिर्द्वयम्।
अर्कोज्झिताच्च नक्षत्राद्धानिवृद्धिः क्रमाद्भवेत् ॥ १४ ॥

हस्तपौष्णाश्विसौम्याश्च पुष्यमैत्रानिलानलाः ।
रोहिणी च प्रशस्ताः स्युः सर्वबीजनिवापने ॥
ओजाश्च तिथयः श्रेष्ठाः पक्षयोरुभयोरपि ।
प्रथमां नवमीं युग्माममावास्यां च वर्ज्जयेत् ॥ १५ ॥
द्वितीया दशमी षष्ठी मध्यमास्तिथयः परे ।
चन्द्रज्ञजीवशुक्राणां वारा वर्गादयः शुभाः ॥ १६ ॥
हलप्रवाहवद् बीजवपनस्य विधिः स्मृतः ।
रोपणे सर्वसस्यानां कर्त्तने प्रथमेऽपि च ॥ १७ ॥

हस्त, रेवती, अश्विनी, आश्लेषा, पुष्य, अनुराधा, स्वाती, कृत्तिका और रोहिणी इन नक्षत्रों में एवं दोनों पक्षों (शुक्लपक्ष, कृष्णपक्ष) की विषम ३, ५, ६ आदि तिथियों में बीजवपन श्रेष्ठ है । प्रतिपदा, नवमी, अमावास्या को छोड़कर अन्य तिथि श्रेष्ठ तथा द्वितीया, दशमी, षष्ठी ये मध्यम हैं । सोम, बुध, वृहस्पति और शुक्र दिनों में हलप्रवाहोक्त विधि से सब बीजों का बोना तथा रोपना (लगाना) और प्रथम-प्रथम काटना शुभ कहा गया है ॥ १४–१७ ॥

अथ धान्यच्छेदनम्—

तीक्ष्णाजपादकरवह्नि श्रुतीन्दु-
स्वातीमघोत्तरजलान्तकतक्षपुष्ये ।
मन्दाररिक्तरहिते दिवसेऽतिशस्ता-
धान्यच्छिदा निगदिता स्थिरभे विलग्ने ॥ १८ ॥

तीक्ष्णसंज्ञक, पूर्वाभाद्रपदा, हस्त, कृत्तिका, धनिष्ठा, श्रवण, मृगशिरा, स्वाती, मघा, तीनों उत्तरा, पूर्वाषाढ़ा, भरणी, चित्रा और पुष्य नक्षत्रों में एवं शनि, मङ्गल दिन को छोड़कर शेष दिनों में, रिक्ता तिथि वर्जित तिथियों में और स्थिर लग्न (वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ) में धान्य का छेदन (खेती कटवाना) शुभ कहा गया है ॥ १८ ॥

अथ कणमर्दनम्—

भाग्यार्यमश्रुतिमघेन्दुविधातृमूल-
मैत्रान्त्यभेषु कथितः कणमर्दनं सत् ॥ १९ ॥

पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराभाद्र, श्रवण, मघा, ज्येष्ठा, रोहिणी, मूल, अनुराधा और रेवती इन नक्षत्रों में कण (बोझे का ढेर) का मर्दन शुभ है ॥ १९ ॥

अथ मेधिस्थापनम्—

वटोदुम्बरनीपानां शाखोटवदरस्य च ।
शाल्मलेर्मुशलेनैव मेधिं कुर्याद्विचक्षणः ॥ २० ॥
कपित्थबिल्ववंशानां मेधिर्नैव शुभावहा ।
न पौषे न च रिक्तायां न कुजार्किदिने तथा ॥ २१ ॥
मृदुध्रुवचरर्क्षेषु खाते द्रव्यं नियुज्य च ।
सम्पूज्य धान्यं बद्ध्वाऽग्रे मेधिं संस्थापयेद् बुधः ॥ २२ ॥

वड़, गूलर, कदम, साहोड़ा, बेर और सेमर काष्ठों की मेधि (मेह) बनवानी चाहिए । कैथा, बेल और बाँस की मेधि शुभदायक नहीं होती है । पौष महीना, रिक्ता तिथि, मङ्गल और शनिवार को छोड़कर मृदु, ध्रुव, चरसंज्ञक नक्षत्रों में खात में पुष्प द्रव्यादि देकर पूजन कर मेधि के अग्र में धान्य बाँधकर स्थापना करना शुभ है ॥ २०–२२ ॥

अथ धान्यप्रवेपणम्—

श्रवणात्त्रयं विशाखाध्रुवपूर्वपुनर्वसूनि ऋक्षाणि ।
पुष्याश्विन्यौ ज्येष्ठो धनधान्यविवृद्धये कथिता ॥ २३ ॥

श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, ध्रुवसंज्ञक, तीनों पूर्वा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्विनी और ज्येष्ठा नक्षत्र धान्य-वृद्धि (व्याज पर धान्य लगाने) के लिए शुभ कहे गये हैं ॥ २३ ॥

अथ नवान्नभक्षणम्—

वृश्चिके पूर्वभागे तु माघे वापि च फाल्गुने ।
सत्तिथौ शुक्लपक्षे च पञ्चम्यन्ते सितेतरे ॥ २४ ॥
मृदुक्षिप्रचरर्क्षेषु सत्तनौ सत्क्षणेषु च ।
हुत्वा वह्नौ विधानेन नवान्नं भक्षयेत्सुधीः ॥ २५ ॥

वृश्चिक के पूर्वार्द्ध (१३ अंश) में तथा माघ और फाल्गुन में शुभ तिथि में शुक्लपक्ष में कृष्णपक्ष के पञ्चमी पर्यन्त, मृदु, क्षिप्र और चरसंज्ञक नक्षत्रों में, शुभ लग्न तथा शुभ मुहूर्त में विधिपूर्वक अग्नि में हवन करके विद्वानों ने नवान्नभक्षण श्रेष्ठ कहा है ॥ २४–२५ ॥

अथ नवान्नभक्षणे विशेषः—

तुलाचापद्विदैवार्कं चैत्रं नन्दां त्रयोदशीम् ।

जन्मर्क्षं शयनं विष्णोः शनिशुक्रकुजान् विना ॥ २६ ॥

तुला और धनु सङ्क्रान्ति, विशाखा नक्षत्र, चैत्र मास, प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी तथा त्रयोदशी तिथि, जन्म-नक्षत्र, हरिशयन (अर्थात् देवोत्थान से पहले), शनि, शुक्र, मङ्गल इन सबोंको छोड़कर नवान्न भक्षण करना शुभ है ॥ २६ ॥

अथ वह्निवासः—

सैका तिथिर्वारयुता कृताप्ता शेषे गुणेऽभ्रे भुवि वह्निवासः।
सौख्याय होमो शशियुग्मशेषे प्राणार्थनाशौ दिवि भूतले च ॥ २७ ॥

तिथि में एक जोड़कर उसमें रव्यादि से दिन जोड़ दें और चार से भाग देने पर तीन और शून्य शेष बचे तो अग्नि का वास पृथ्वी पर जानना चाहिए, उसमें हवन करे तो सौख्य होता है। एक और दो शेष बचे तो अग्नि का वास आकाश या पाताल में जानना चाहिए, उसमें यदि हवन करे तो प्राण और अर्थ (धन) का नाश होता है। तिथि की गणना प्रायः तिथिकार्य में शुक्ल पक्ष से होती है। जैसा कि लिखा है—

"शुक्लादिगणना कार्या तिथीनां गणिते सदा" इत्यादि।

उदाहरण—

जैसे कार्तिक शुक्ल पञ्चमी, बृहस्पति को हवन करना अभीष्ट है। तिथि ५, वार ५, दोनों को मिलाया तो १० हुआ, और योग में १ जोड़ दिया ११ हुआ, इसमें चार का भाग देने से लब्धि ३, इस कारण अग्नि का वास पृथ्वी पर हुआ, इसमें हवन करने से सौख्य और लाभ होगा। यह विचार हवनात्मक काम्य हवन के लिए है। जप, यज्ञादि हवन में इसका विचार नहीं होता ॥ २७ ॥

अथ भैषज्यनिर्माणम्—

पौष्णद्वये चादितिभद्वये च हस्तत्रये च श्रवणत्रये च।
मैत्रे च मूले च मृगे च शस्तं भैषज्यकर्म प्रवदन्ति सन्तः ॥ २८ ॥

रेवती, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, अनुराधा, मूल और मृगशिरा नक्षत्रों में औषध बनाना शुभ है ॥ २८ ॥

वारा निगदिताः शस्ता भैषज्यस्य च कर्मणि।
सुरेज्यभार्गवादित्यचन्द्रा नित्यं बुधैः सदा ॥ २९ ॥

बृहस्पति, शुक्र, रवि और सोम दिनों में भैषज्य (औषध) सेवन प्रशस्त कहा गया है ॥ २९ ॥

हस्तादितिश्रवणसोमसमीरणेषु मूलानलेन्द्रवसुतिष्ययुतेषु भेषु ।
भैषज्यपानमचिरादपहृत्य रोगं कन्दर्पतुल्यवपुषं पुरुषं करोति ॥ ३० ॥

हस्त, पुनर्वसु, श्रवण, मृगशिरा, स्वाती, मूल, कृत्तिका, ज्येष्ठा, धनिष्ठा और पुष्य नक्षत्रों में औषध का पान करने से बहुत दिन का भी रोग शीघ्र नाश होकर थोड़े ही दिनों में मनुष्य का शरीर कामदेव के समान सुन्दर होता है ॥ ३० ॥

अथ रोगिविमुक्तस्नानम्—

आर्द्रातिष्यविशाखशक्रदहने मूलानुराधाश्विनी-
पूर्वाषाढ़हरित्रये निगदितं चन्द्रो विहीनः शुभः ।
सूर्यारार्किदिने गुरौ शुभकरे केन्द्रे च पापान्विते
रिक्तायां च तिथौ सविष्ठिकरणे स्नानं हितं रोगिणाम् ॥ ३१ ॥

आर्द्रा, पुष्य, विशाखा, ज्येष्ठा, कृत्तिका, मूल, अनुराधा, अश्विनी, पूर्वाषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा और शतभिषा नक्षत्रों में, कृष्ण पक्ष में, रवि, मंगल, शनि और बृहस्पति दिनों में पाप ग्रह केन्द्र में हों, रिक्ता (४, ९, १४) तिथि में, भद्रा करण में रोगियों के लिए स्नान करना हितकर कहा गया है ।

अथ गृहप्रकरणम् । तत्रादौ गृहनिर्माणे मासशुद्धिः—

वैशाखे श्रवणे मार्गे फाल्गुने च विशेषतः ।
पत्नीपुत्रार्थलाभः स्याद् गृहकर्तुर्न संशयः ॥ ३२ ॥

वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष, फाल्गुन में गृहनिर्माण करने से पत्नी, पुत्र, धन का लाभ होता है ॥ ३२ ॥

अथ तिथिपक्षशुद्धिः

दारिद्र्यं प्रतिपत् कुर्यात् चतुर्थी धनहारिणी ।
अष्टम्युच्चाटनं चैव नवमी शस्त्रघातिनी ॥
अमायां राजभीतिश्च चतुर्दश्यां स्त्रियः क्षयः ।
शुक्लपक्षे भवेत्सौख्यं कृष्णे तस्करतो भयम् ॥ ३३ ॥

गृहारम्भ में प्रतिपद् दारिद्र्य करने वाली, चतुर्थी धननाश करने वाली, अष्टमी उच्चाटनदायिनी, नवमी घातकारिणी, अमावास्या राजभयदात्री और चतुर्दशी स्त्री-विनाशिनी होती है । शेष तिथि गृहारम्भ में शुभ है । शुक्लपक्ष में गृहारम्भ करने से सौख्य और कृष्णपक्ष में चौरभय होता है ॥ ३३ ॥

अथ गृहारम्भे नक्षत्रदिनादिशुद्धिः—

हस्तादित्यशशाङ्कपुष्यपवनप्राज्येशमित्रोत्तरा-
चित्राश्विश्रवणेषु वृश्चिकघटौ त्यक्त्वा विरक्ते तिथौ ।
शुक्राचार्यशनैश्चरज्ञशशिनो वारेऽनुकुले विधौ
सद्भिर्वेश्यनि सूतिका गृहविधिः क्षेमंकरः कीर्त्यंते ॥ ३४ ॥

हस्त, पुनर्वसु, मृगशिरा, पुष्य, स्वाती, ज्येष्ठा, अनुराधा, तीनों उत्तरा, चित्रा, अश्विनी और श्रवण इन नक्षत्रों में, वृश्चिक, कुम्भ लग्न को छोड़ शेष लग्न में, रिक्ता वर्जित तिथि में, शुक्र, शनि, बुध और सोम दिन में अनुकूल चन्द्रमा रहने से अर्थात् चन्द्रमा सम्मुख, दक्षिण हो तो सूतिका आदि के लिए गृह बनवाना पण्डितों ने शुभ कहा है ॥ ३४ ॥

अथ गृहप्रवेशे मासाः—

माघेऽर्थलाभः प्रथमे प्रवेशे पुत्रार्थलाभः खलु फाल्गुने च ।
चैत्रेऽर्थहानिधनधान्यलाभो वैशाखमासे पशुपुत्रलाभः ॥
ज्येष्ठे च मासेषु परेषु नूनं हानिप्रदः शत्रुभयप्रदश्च ॥ ३५ ॥

गृहप्रवेश में माघ धनलाभकारक, फाल्गुन पुत्र और धनलाभकारक, चैत्र में धन की हानि, वैशाख में धनधान्य का लाभ और ज्येष्ठ मास में पशु-पुत्र का लाभ, इनसे भिन्न मासों में शत्रुभय तथा हानि होती है ॥ ३५ ॥

अथ गृहप्रवेशमुहूर्तः—

गृहारम्भोदितैर्मासैर्धिष्ण्ये वारे विशेद् गृहम् ।
विशेत्सौम्यायने हर्म्यं तृणागारं तु सर्वदा ॥ ३६ ॥

गृहारम्भ में कहे हुए मास, दिन, पक्ष, तिथि और नक्षत्रों में, सौम्यायन में गृहप्रवेश शुभ है। तृण के घर में यह विचार नहीं। सदैव प्रवेश करना चाहिए ॥ ३६ ॥

अथ दीक्षाग्रहणम्—

मासेष्वाश्विनभे हि षट्सु पुरतः स्यात् श्रावणे माधवे
भद्रापूर्णत्रयोदशी शुभतिथौ, शुक्रेन्दुजेन्दौ गुरौ ।
रोहिण्युत्तरशाक्रशङ्करमरुत्पुष्यद्विदेवाश्विनी-
विष्णुश्चन्द्रबले सुलग्नसमये दीक्षाविधिः शोभनः ॥ ३८ ॥

आश्विन, कार्तिक, अगहन, पूस, माघ, फाल्गुन, श्रावण और वैशाख इन महीनों में, भद्रा, पूर्णा, त्रयोदशी आदि शुभ तिथि में, शुक्र, बुध, चन्द्र और

बृहस्पति दिन में, रोहिणी, तीनों उत्तरा, ज्येष्ठा, आर्द्रा, स्वाती, पुष्य, विशाखा, अश्विनी और श्रवण नक्षत्रों में, चन्द्रबल से युक्त होकर, शुभ लग्नों में मंत्रग्रहण करना शुभ कहा गया है ॥ ३८ ॥

अथ पुष्करण्यादिखननम्—

वैशाखे श्रावणे माघे फाल्गुने मार्गकार्त्तिके ।
पौषे ज्येष्ठे भवेत्सिद्धचै वाप्याः कुपतडागयोः ॥ ३९ ॥

एकादशी द्वितीया च तृतीया पञ्चसप्तमी ।
प्रतिपद्दशमी श्रेष्ठा पूर्णिमा च त्रयोदशी ॥
एतास्सितदले चैव भार्गवेन्द्विज्यवासरे ।
दशमस्थे भृगोः पुत्रे जलखातः प्रशस्यते ॥ ४० ॥

मृदुध्रुवक्षिप्रचरेषु लग्ने झषे घटे वा मकराभिधे च ।
आप्ये विधौ सर्वजलाशयानां सदा समारम्भमुशन्ति सन्तः ॥ ४१ ॥

वैशाख, श्रावण, माघ, फाल्गुन, अगहन, कार्तिक, पूस और ज्येष्ठ इन महीनों में वापी (बावली), कूप, तडाग (पोखरा) आदि खनवाना शुभ कहा गया है। शुक्ल पक्ष की एकादशी, द्वितीया, पञ्चमी, सप्तमी, प्रतिपदा, दशमी, पूर्णिमा और त्रयोदशी तिथियों में तथा शुक्र, चन्द्र और गुरु दिनों में, दशम लग्न में शुक्र हो तो जलाशय खनवाना, उसकी प्रतिष्ठा आदि सब कार्य शुभ है। मृदु ध्रुव, क्षिप्र और चरसंज्ञक नक्षत्रों में, मीन, कुम्भ और मकर लग्न में और चन्द्रमा जलचर राशि में स्थित हो तो सभी जलाशयों का आरम्भ करना आचार्यों ने शुभ कहा है ॥ ३९–४१ ॥

अथ जलाशयादिप्रतिष्ठा—

मार्त्तण्डेन्दूडुशुद्धौ मुरजिदशयने माघषट्कस्य शुक्ले,
मूलाषाढोत्तराश्विश्रवणगुरुकरैः पौष्णशक्राजचान्द्रे ।
मैत्रे ब्राह्मे च पूर्णामदनरवितिथौ सद्वितीयातृतीये,
कार्या तोयप्रतिष्ठा ज्ञगुरुसितदिने कालशुद्धे सुलग्ने ॥ ४२ ॥

सूर्य, चन्द्रमा और नक्षत्र के शुद्ध रहने पर, उत्तरायण में माघ आदि छः महीनों के शुक्लपक्ष में, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, तीनों उत्तरा, अश्विनी, श्रवण, पुष्य, हस्त, रेवती, पूर्वाषाढ़, मृगशिरा, अनुराधा और रोहिणी नक्षत्र में पूर्णा, त्रयोदशी, द्वादशी,

द्वितीया, तृतीया, तिथियों में, बुध, गुरु, शुक्र वारों में, शुभ लग्न और शुभ मुहूर्त में जलाशय आदि की प्रतिष्ठा शुभ है ॥ ४२ ॥

अथ देवादिप्रतिष्ठा

प्राजेशशक्रहरिहस्तसमीरणेषु
मूलेन्दुमैत्रगुरुपौष्णशिवोत्तरेषु ।
शस्ते दिने शुभतिथौ शशिनि प्रवृद्धौ,
धन्यां वदन्ति निखिलां शुभदां प्रतिष्ठाम् ॥ ४३ ॥

रोहिणी, ज्येष्ठा, श्रवण, हस्त, स्वाती, मूल, मृगशिरा, अनुराधा, पुष्य, रेवती, आर्द्रा और तीनों उत्तरा इन नक्षत्रों में, शुक्लपक्ष के शुभ दिन और शुभ तिथियों में सब देवताओं की प्रतिष्ठा शुभदायक है ॥ ४३ ॥

अत्राऽत्र विशेषः—

गीर्वाणाम्बुप्रतिष्ठापरिणयदहनाधानगेहप्रवेशाश्चौलं,
राज्याभिषेको व्रतमपि शुभदं नैव याम्यायने स्यात् ।
नो वा बाल्यास्तवार्द्धे सुरगुरुसितयोर्नैव केतूदये स्याद,
न्यूने मासेऽधिके वा नहि च सुरगुरौ सिंहनक्रस्थिते वा ॥ ४४ ॥

देवताओं की और जलाशयों की प्रतिष्ठा, विवाह, अग्न्याधान, गृहप्रवेश, मुण्डन, राज्याभिषेक, उपनयन (यज्ञोपवीत) इत्यादि याम्यायन में वर्जित है और गुरु, शुक्र के बाल्य, वृद्ध अस्त रहने पर तथा केतूदय में, क्षयमास, मलमास, वृहस्पति, सिंह या मकर राशिगत हों तो उक्त शुभ कार्यों को करना मना है ॥ ४४ ॥

अथ क्षौरमुहूर्त्तः—

दन्तक्षौरनखक्रियाऽत्र विहिता चौलोदिते वारभे,
पातङ्ग्यारवीन्विहाय नवमं घस्रं च सन्ध्यां तथा ।
रिक्तां पर्व निशां निरासनरणग्रामप्रयाणोद्यत-
स्नाताभ्यक्तकृताशनैर्नहि पुनः कार्या हितप्रेप्सुभिः ॥ ४५ ॥

चौल कर्म में कहे हुए वार तथा नक्षत्र में, शनि, मङ्गल, रवि इन दिनों को छोड़कर शेष दिनों में क्षौर कराना शुभ है और नवें दिन में, सन्ध्याकाल, रिक्ता-तिथि, पर्वदिन, रात्रि में, आसनरहित होकर, युद्ध में जाने के समय या यात्रा के समय, स्नान के बाद, भोजन करके, तेल लगाकर, अपने कल्याण को चाहने वाले पुरुष क्षौर न करें ॥ ४५ ॥

अथ ऋणग्रहणमुहूर्त्तः

स्वात्यादित्यमृदुद्विदैवगुरुभे कर्णत्रयाश्वे चरे,
लग्ने धर्मसुताष्टशुद्धिरहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः ।
नारे ग्राह्यमृणं तु सङ्क्रमदिने वृद्धौ करेऽर्केऽह्नि यत्,
तद्वंशेषु भवेदृणं न च बुधे देयं कदाचिद्धनम् ।। ४६ ।।

स्वाती, पुनर्वसु, मृदुसंज्ञक, विशाखा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, अश्विनी और चरसंज्ञक इन नक्षत्रों में पाँचवाँ, आठवाँ और नवाँ लग्न शुद्ध रहे तो द्रव्य-प्रयोग करना शुभ है । मङ्गल के दिन में, संक्रान्ति के दिन में, वृद्धि योग में, हस्त नक्षत्र में, रविवार को ऋण ग्रहण न करे। इन मुहूर्तों में जो ऋण ग्रहण करता है वह सदैव ऋणी रहता है और बुधवार को कदापि नहीं धन देना चाहिए ।। ४६ ।।

अथ ऋणोद्धारः—

ऋणं भौमे न गृह्णीयान्न देयं बुधवासरे ।
ऋणच्छेदं कुजे कुर्यात् सञ्चयं सोमनन्दने ।। ४७ ।।

मङ्गल को ऋण नहीं लेना चाहिए और बुध को देना नहीं चाहिए । इसी प्रकार मङ्गल को ऋणोद्धार करना शुभ है और बुध को ऋण ग्रहण करना भी शुभ है ।। ४७ ।।

अथ वृक्षलताराजदर्शनगोक्रयविक्रयमुहूर्त्ताः—

राधामूलमृदुध्रुवर्क्षवरुणक्षिप्रैर्लतापादपा-
रोपोऽर्थी नृपदर्शनं ध्रुवमृदुक्षिप्रश्रवोवासवैः ।
तीक्ष्णोग्राम्बुपभेषु मद्यमुदितं क्षिप्रान्त्यवह्नीन्द्रभा-
दित्येन्दाम्बुपवासवेषु हि गवां शस्तः क्रयो विक्रयः ।। ४८ ।।

विशाखा, मूल, मृदुसंज्ञक तथा ध्रुवसंज्ञक, शतभिषा इन नक्षत्रों में लता तथा वृक्ष का लगाना शुभ है। ध्रुव, मृदु, क्षिप्रसंज्ञक, श्रवण और धनिष्ठा इन नक्षत्रों में राजाओं का दर्शन करना शुभ है। तीक्ष्ण, उग्रसंज्ञक, शतभिषा इन नक्षत्रों में मद्यक्रिया शुभ है। क्षिप्रसंज्ञक, रेवती, विशाखा, पुनर्वसु, ज्येष्ठा, धनिष्ठा और शतभिषा इन नक्षत्रों में गौओं का खरीदना और बेचना शुभ है ।। ४८ ।।

अथ खट्वा-पादुकाद्युपभोगमुहूर्त्तः—

मैत्रेन्दुपुष्ययमभादितिवाजिचित्राहस्तोत्तरात्रयहरीज्यविधातृभानि ।
एतेष्वतीवशयनासनपादुकानां सम्भोगकार्यमुदितं मुनिभिः शुभाहे ॥ ४९ ॥

मैत्रसंज्ञक, पुष्य, भरणी, पुनर्वसु, अश्विनी, चित्रा, हस्त, तीनों उत्तरा, श्रवण, अभिजित् और रोहिणी इन नक्षत्रों में, शुभ दिनों में शय्या, आसन, पादुका (खड़ाऊँ, जूते) आदि का भोग करना मुनियों ने अत्यन्त शुभ कहा है ॥ ४९ ॥

अथ सर्वार्थसिद्धियोगः—

सूर्येऽर्कमूलोत्तरपुष्यदास्रं चन्द्रे श्रुतिब्राह्मशशीज्यमैत्रम् ।
भौमेऽश्व्यहिर्बुध्न्यकृशानुसार्पं ज्ञे ब्राह्ममैत्रार्ककृशानुचान्द्रम् ॥ ५० ॥
जीवेऽन्त्यमैत्राश्व्यदितीज्यधिष्ण्यं शुक्रेऽन्त्यमैत्राश्व्यदितिश्रवोभात् ।
शनौ श्रुतिब्राह्मसमीरभानि सर्वार्थसिद्ध्यै कथितानि पूर्वैः ॥ ५१ ॥

रविवार को हस्त, मूल, तीनों उत्तरा, पुष्य, अश्विनी । सोमवार को श्रवण, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, अनुराधा । मङ्गल को अश्विनी, उत्तराभाद्र, कृत्तिका, आश्लेषा । बुध को रोहिणी, अनुराधा, हस्त, कृत्तिका, मृगशिरा । गुरुवार को रेवती, अनुराधा, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य । शुक्रवार को रेवती, अनुराधा, अश्विनी, पुनर्वसु, श्रवण । शनिवार को श्रवण, रोहिणी, स्वाती ये नक्षत्र पूर्वाचार्यों ने सर्वार्थसिद्धि (सभी कार्य के लिए सिद्धिदायक) कहे हैं ॥ ५०–५१ ॥

अथ जन्मपत्रलेखन प्रकारः—

आदित्याद्या ग्रहाः सर्वे सनक्षत्राः सराशयः ।
दीर्घमायुः प्रयच्छन्तु यस्यैषा जन्मपत्रिका ॥ ५२ ॥

अथ शुभश्रीमन्नृपतिवीरविक्रमादित्यराजसमयाद् गताब्दाः सम्वत् २०२६, श्रीशालिवाहनशकाद्गताब्दाः शकः १८९० मासोत्तमे अमुकमासे शुभे अमुक पक्षे अमुक तिथावमुकवासरे घटयादि अमुकनक्षत्रे घटयः अमुकयोगे अमुक करणस्य घटयादिः पञ्चाङ्गशुद्धौ दिन घटयादि निशिमानम् अहोरात्रम् ६०।००॥

अमुकार्कागतांशाः भोग्यांशाः तत्र श्रीसूर्योदयादिष्टम् तत्समये अमुकलग्नेऽमुक गोत्रोद्भवामुकशर्मगृहे पुत्रो जातस्तन्नाम अमुकनक्षत्रस्य अमुकचरणे जनिवशात् अमुकाद्यक्षरं यथास्वरेणीदृशं बोध्यम् । देवद्विजाशीर्भिः दीर्घायुर्भूयात् ।

जन्माङ्कम्

४ लग्न
५
सू के ६ शु
बु ७ चं बृ
८
मं ९
श १०
११
रा १२
१
२
३

अथ चन्द्राङ्कम्

चं ७ बु बृ
शु ६ के सू
५
४
३
२
१
१२ रा
११
श १०
मं ९
८

उपर्युक्त क्रम से जन्मपत्र लिखने का विधान है ।

इति जन्मपत्रम्

इति ज्योतिषाचार्यश्रीकमलाकान्तशुक्लसंगृहीतं

वृहदवकहडाचक्रं समाप्तम् ।

लघ्वतिलघुवस्तुनिष्ठप्रश्नोत्तराणि

१.प्रश्नः— कति वाराः भवन्ति ?

उत्तरम्— सप्त वाराः भवन्ति।

२.प्रश्नः— के सप्त वाराः ?

उत्तरम्— रविवारः, सोमवारः, भौमवारः, बुधवारः, वृहस्पतिवारः, शुक्रवारः, शनिवारश्चेति वाराः।

३.प्रश्नः— के शुभवाराः ?

उत्तरम्— गुरुः, चन्द्रः, बुधः, शुक्रः —एते शुभवाराः।

४.प्रश्नः— केषां वाराणां रात्रौ दोषो न भवति ?

उत्तरम्— देवेज्य-दैत्येज्य-दिवाकराणां रात्रौ दोषो न भवति।

५.प्रश्नः— कस्य वारस्य दोषः दिवा रात्रौ च निन्द्यो भवति ?

उत्तरम्— बुधवारस्य दोषः दिवा रात्रौ च सर्वत्र निन्द्यो भवति।

६.प्रश्नः— केषां वाराणां रात्रिरेव दोषः दिवा नैव भवति ?

उत्तरम्— शशांक-अर्कज-भूसुतानां दिवा दोषो नैव भवति।

७.प्रश्नः— रवौ वासरे तैलाभ्यङ्गे किं फलं भवति ?

उत्तरम्— रविवासरे तैलाभ्यङ्गे तापो भवति।

८.प्रश्नः— कदा तैलाभ्यङ्गे कान्तिं वितरति ?

उत्तरम्— सोमवासरे तैलाभ्यङ्गे कान्तिं वितरति।

९.प्रश्नः— द्वादशमासानां कानि नामानि ?

उत्तरम्— मधुः, माधवः, शुक्रः, शुचिः, नभः, नभस्यः, ईषः ऊर्जः, सहः सहस्य तपः, तपस्यः— एतानि द्वादशमासानां नामानि सन्ति।

१०.प्रश्नः— कीदृशं तैलं निषिद्धदिनेष्वपि सेव्यं भवति ?

उत्तरम् — मन्त्रितं, क्वथितं, सार्षपं, पुष्पवासितं, द्रव्यान्तरयुतं तैलं निषिद्धदिनेष्व सेवनीयं भवति।

११.प्रश्नः— कति अयने ?
उत्तरम्— द्वे अयने— दक्षिणायनं उत्तरायणश्चेति ।

१२.प्रश्नः— सौम्यायने कानि कार्याणि सम्पाद्यन्ते ?
उत्तरम्— गृहप्रवेश-त्रिदश-प्रतिष्ठा-विवाह-चौल-व्रतबन्धश्चेति इत्यादीनि कर्माणि सौम्यायने सम्पादनीयानि भवन्ति ।

१३.प्रश्नः— कतिसंख्याकास्तिथयो भवन्ति ?
उत्तरम्— पञ्चदशसंख्याकास्तिथयो भवन्ति ।

१४.प्रश्नः— तिथयः कियती भागयोर्विभक्ताः सन्ति ?
उत्तरम्— तिथयो द्वयोः भागयोर्विभक्ताः सन्ति ।

१५.प्रश्नः— के च ते भागे ?
उत्तरम्— शुक्लः कृष्णश्चेति द्वे भागे ।

१६.प्रश्नः— कृष्णे पक्षे चरमा तिथिः काऽस्ति ?
उत्तरम्— कृष्णे पक्षे चरमा तिथिः आमावास्या अस्ति ।

१७.प्रश्नः— शुक्ले पक्षे चरमा तिथिः काऽस्ति ?
उत्तरम्— शुक्ले पक्षे चरमा तिथिः पौर्णमासी विद्यते ।

१८.प्रश्नः— पुनस्तिथयः कति भागेषु विभाजिताः सन्ति ?
उत्तरम्— पुनस्तिथयः पञ्चभागेषु विभक्ताः सन्ति ।

१९.प्रश्नः— के ते पञ्च भागाः तिथीनाम् ?
उत्तरम्— नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता, पूर्णा चेति तिथीनां पञ्चभागाः ।

२०.प्रश्नः— का नन्दास्तिथयः ?
उत्तरम्— प्रतिपत् षष्ठी एकादशी चेति नन्दातिथयः भवन्ति ।

२१.प्रश्नः— भद्रासंज्ञकाः तिथयः काः ?
उत्तरम्— द्वितीया सप्तमी द्वादशी चेति भद्रातिथयः ।

२२.प्रश्नः— काः तिथयो जया कथ्यन्ते ?
उत्तरम्— तृतीया अष्टमी त्रयोदशी चेति जयातिथयः ।

२३.प्रश्नः— रिक्तातिथयः के भवन्ति ?
उत्तरम्— चतुर्थी नवमी चतुर्दशी चेति तिथयो रिक्ताः भवन्ति ।

२४.प्रश्नः— काः तिथयः पूर्णा सन्ति ?
उत्तरम्— पञ्चमी दशमी पौर्णमासी चेति पूर्णाः तिथयो भवन्ति।

२५.प्रश्नः— कतिसंख्याकास्तिथयो भवन्ति ?
उत्तरम्— पञ्चदशसंख्याकास्तिथयो सन्ति।

२६.प्रश्नः— कास्ते पञ्चदशसंख्याकास्तिथयः ?
उत्तरम्— प्रतिपत्, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, पौर्णमासी चेति पञ्चदशतिथयः।

२७.प्रश्नः— अमावास्या कदाऽऽयाति ?
उत्तरम्— अमावास्या कृष्णपक्षस्य चतुर्दश्यनन्तरमायाति।

२८.प्रश्नः— शुक्लपक्षस्य चतुर्दश्यनन्तरं का तिथिः समापतति ?
उत्तरम्— शुक्लपक्षस्य चतुर्दश्यनन्तरं पौर्णमासी तिथिः समापतति।

२९.प्रश्नः— नन्दासु तिथिषु किं कार्यं भवति ?
उत्तरम्— चित्रोत्सव-वास्तु-तन्त्र-नृत्यादिकार्यं भवति।

३०.प्रश्नः— पूर्णासु तिथिषु कानि कार्याणि सम्पादनीयानि ?
उत्तरम्— माङ्गल्य-विवाह-यात्रादिकार्याणि सम्पादनीयानि।

३१.प्रश्नः— भौमवारे भद्रायां तिथौ को योगो भवति ?
उत्तरम्— भद्रायान्तिथौ भौमवासरे सिद्धयोगो भवति।

३२.प्रश्नः— नन्दायां तिथौ बुधवासरे को योगो भवति ?
उत्तरम्— नन्दायां तिथौ बुधवासरे सिद्धयोगो भवति।

३३.प्रश्नः— कस्यान्तिथौ शनिवारे सिद्धयोगः स्यात् ?
उत्तरम्— रिक्तायान्तिथौ शनिवासरे सिद्धयोगः स्यात्।

३४.प्रश्नः— भद्रायान्तिथौ मृत्युयोगो कदा भवति ?
उत्तरम्— भद्रायान्तिथौ यदा भार्गवचन्द्रवासरौ स्यातां तदा मृत्युयोगो भवति।

३५.प्रश्नः— अमृतयोगो कदा भवति ?
उत्तरम्— चन्द्रार्कयोः यदा पूर्णा तिथि भवेत्तदा अमृतयोगो भवति।

३६.प्रश्नः— कति नक्षत्राणि भवन्ति ?

उत्तरम्– सप्तविंशति नक्षत्राणि भवन्ति ।

३७.प्रश्नः– कमादायाष्टाविंशति भवन्ति नक्षत्राणि ?

उत्तरम्– अभिजिन्नक्षत्रमादायाष्टाविंशति नक्षत्राणि भवन्ति ।

३८.प्रश्नः– अश्विनीनक्षत्रस्य कः स्वामी ?

उत्तरम्– अश्विनीनक्षत्रस्य स्वामी अश्विनीकुमारः ।

३९.प्रश्नः– वृहस्पतिः कस्य नक्षत्रस्य स्वामी भवति ?

उत्तरम्– वृहस्पतिः पुष्यनक्षत्रस्य स्वामी भवति ।

४०.प्रश्नः– कृत्तिकानक्षत्रस्य स्वामी कोऽस्ति ?

उत्तरम्– कृत्तिकानक्षत्रस्य स्वामी अग्निरस्ति ।

४१.प्रश्नः– कानि नक्षत्राणि ध्रुवसंज्ञकानि ?

उत्तरम्– उत्तरात्रयः रोहिण्यो भास्करश्च ध्रवं स्थिरमिति ।

४२.प्रश्नः– कदा कानि नक्षत्राणि चरसंज्ञकानि भवन्ति ?

उत्तरम्– सोमवासरे स्वाती-पुनर्वसु-श्रवण-धनिष्ठा-शतभिषानक्षत्राणि चरसंज्ञकानि स्युस्तेषां 'जलचर' वा संज्ञा भवति ।

४३.प्रश्नः– कानि नक्षत्राणि कदा उग्रसंज्ञकानि ?

उत्तरम्– भौमवासरे पूर्वात्रियं याम्यमघे उग्रसंज्ञकानि भवन्ति ।

४४.प्रश्नः– कति योगाः भवन्ति विष्कम्भादयः ?

उत्तरम्– विष्कम्भादयो योगाः सप्तविंशतिसंख्याकाः भवन्ति ।

४५.प्रश्नः– कति करणानि भवन्ति ?

उत्तरम्– एकादश करणानि भवन्ति ।

४६.प्रश्नः– करणभेदान् प्रदर्शयत ?

उत्तरम्– चर-स्थिरभेदेन करणानां द्वैविध्यम् ।

४७.प्रश्नः– कानि चरकरणानि ?

उत्तरम्– बव-बालव-कौलव-तैतिल-गर-वणिज-विष्टिरिति सप्त चरकरणानि ।

४८.प्रश्नः– स्थिरकरणानि कानि ?

उत्तरम्– शकुनि-चतुष्पद-नाग-किंस्तुघ्नेति चत्वारि स्थिरकरणानि ।

४९.प्रश्नः–'विष्टि'शब्दस्यार्थः कः ?

उत्तरम्– 'विष्टि'शब्दः भद्रायाः पर्यायवाची एवं करणस्यापरपर्यायोऽस्ति।

५०.प्रश्नः– भद्रा नागलोके कदा भवति ?

उत्तरम्– यदा कन्या-मकर-तुला-धनुराशिषु चन्द्रः सञ्चरति, तदा भद्रा नागलोके भवति।

५१.प्रश्नः– मेष-वृश्चिक-वृष-मिथुनराशिषु चन्द्रे सति कुत्र वसति भद्रा ?

उत्तरम्– मेष-वृश्चिक-वृष-मिथुनराशिगते चन्द्रे भद्रायाः वासः स्वर्गलोके भवति।

५२.प्रश्नः– मृत्युलोके कदा भवति भद्रा ?

उत्तरम्– कर्क-सिंह-कुम्भ-मीनेषु चन्द्रे भद्रा मर्त्यलोके भवति।

५३.प्रश्नः– कति राशयो भवन्ति ?

उत्तरम्– द्वादश राशयो भवन्ति।

५४.प्रश्नः– द्वादशराशीनां कानि नामानि ?

उत्तरम्– मेष-वृष-मिथुन-कर्क-सिंह-कन्या-तुला-वृश्चिक-धनु-मकर-कुम्भ-मीनश्चेति द्वादश राशयो भवन्ति।

५५.प्रश्नः– केषु राशिषु चन्द्रः पूर्वस्यां दिशि भवति ?

उत्तरम्– मेष-सिंह-धनुराशिषु चन्द्रः पूर्वस्यां दिशि भवति।

५६.प्रश्नः– वृष-कन्या-मकरेषु राशिषु कस्यां दिशि चन्द्रमा भवति ?

उत्तरम्– वृष-कन्या-मकरराशिषु चन्द्रमा दक्षिणस्यां दिशि भवति।

५७.प्रश्नः– उत्तरस्यां दिशि कदा भवति चन्द्रमा ?

उत्तरम्– कर्कट-वृश्चिक-मीनराशिषु चन्द्रमा उत्तरस्यां दिशि भवति।

५८.प्रश्नः– प्रतीच्यां चन्द्रमा कदा भवति ?

उत्तरम्– मिथुन-तुला-कुम्भेषु राशिषु चन्द्रमा प्रतीच्यां दिशि भवति।

५९.प्रश्नः– एकस्य नक्षत्रस्य कति चरणानि भवन्ति ?

उत्तरम्– एकस्य नक्षत्रस्य चत्वारि चरणानि भवन्ति।

६०.प्रश्नः– एकस्यां राशौ कति नक्षत्राणि भवन्ति ?

उत्तरम्– एकस्यां राशौ सपादद्वयनक्षत्राणि भवन्ति।

६१.प्रश्नः– कति चरणानामेका राशिर्जायते ?

उत्तरम्– नवचरणानामेका राशिर्जायते।

६२.प्रश्नः– सन्मुखश्चन्द्रः किं फलं ददाति ?
उत्तरम्– सन्मुखश्चन्द्रः अर्थलाभं कारयति।

६३.प्रश्नः– दक्षिणे चन्द्रे यात्रायां किं फलं भवति ?
उत्तरम्– दक्षिणे चन्द्रे यात्रायां सुखं सम्पत्तिश्च भवति।

६४.प्रश्नः– वामे पृष्ठे च चन्द्रे सति यात्रायां किं फलं प्राप्यते ?
उत्तरम्– वामे पृष्ठे च चन्द्रे यात्रायां मरणं धनक्षयश्च भवति।

६५.प्रश्नः– स्वराशितः चतुर्थे चन्द्रे किं फलम् ?
उत्तरम्– स्वराशितश्चतुर्थे चन्द्रे विवादो भवति।

६६.प्रश्नः– एकस्यां राशौ के के ग्रहाः कियन्ति दिनानि निवसन्ति ?
उत्तरम्– एकस्यां राशौ सूर्यः त्रिंशदेकत्रिंशद्वा दिनानि, शुक्रः सप्तविंशति दिनानि, बुधः एकविंशति दिनानि, भौमः पञ्चचत्वारिंशद्दिनानि निवसति। पुनश्च शनैश्चरः त्रिंशन्मासपर्यन्तमेकराशौ तिष्ठति, केतुः राहुश्च अष्टादश-मासपर्यन्तमेकस्यां राशौ तिष्ठतः तथा गुरुः त्रयोदशमासान् एकस्यां राशौ निवसति।

६७.प्रश्नः– कियद्भिर्दिवसैः प्रसूतीनां शुद्धिर्भवति ?
उत्तरम्– अजागावो महिष्यश्च ब्राह्मणानां च सूतिकाः।
दशाहेनैव शुद्ध्यन्ति भूमिष्ठञ्च नवोदकम्॥ इति।

६८.प्रश्नः– नवजातशिशूनां कदा विलोकनं शुभं भवति ?
उत्तरम्– तृतीये मासि यात्रोक्ततिथावग्न्यर्कचन्द्रयोः।
वारे च कुलरीत्या वा शुभं शिशुविलोकनम्॥ इति।

६९.प्रश्नः– जंन्मतः कतिषु मासेषु बालानां दन्तोत्पत्तिः शुभं भवति ?
उत्तरम्– जन्मतः पञ्चमासेषु दन्तोत्पत्तिर्न शोभना।
शुभा षष्ठादिके ज्ञेया न सदन्तजनिः शुभा॥ इति।

७०.प्रश्नः– बालानां जन्मतः कतिषु मासेषु अन्नप्राशनं शुभं भवति ?
उत्तरम्– 'मासौ षष्ठाष्टमौ पुंसां स्त्रीणां मासश्च पञ्चम' इति वचनाद्बालकस्य जन्मतः षष्ठाष्टमे वा मासे बालिकायाश्च पञ्चमे मासे अन्नप्राशनं शुभं भवति।

७१.प्रश्नः– मुण्डनमुहूर्त्तं दर्शयत ?

७२.प्रश्नः– उत्तरायणं कदा भवति ?

उत्तरम्– यदा सूर्यः मकर-कुम्भ-मीन-मेष-वृष-मिथुनराशिषु सञ्चरति तदा उत्तरायणं भवति ।

७३.प्रश्नः– विद्यारम्भः कदा कर्त्तव्यः ?

उत्तरम्– विद्यारम्भः पञ्चमे वर्षे कार्त्तिकशुक्लैकादशीतः आषाढशुक्लदशमीं यावत् अनध्यायं षष्ठीञ्च तिथिं परित्यज्य कर्त्तव्यः ।

७४.प्रश्नः– ब्राह्मण-क्षत्रिय-विशां व्रतबन्धः कदा कर्त्तव्यः ?

उत्तरम्– गर्भतः जन्मतो वा ब्राह्मणस्याष्टमे वर्षे, क्षत्रियस्यैकादशे वर्षे वैश्यस्य च द्वादशे वर्षे व्रतबन्धः कर्त्तव्यः ।

७५.प्रश्नः– उपनयने कथं गुरुशुद्धिर्विचारणीयः ?

उत्तरम्– वटोः जन्मराशेः ९-५-११-२-७ राशिगतो गुरुः शुभः ।

७६.प्रश्नः– कस्मिन्मासे विवाहः प्रशस्यते ?

उत्तरम्– कन्या माघे धनवती, फाल्गुने सुखदा, वैशाखे ज्येष्ठे च पतिवल्लभा विवाहिता भवति चेत् भवति आषाढे च कन्यायाः विवाहे कृते पतिकुलस्य वृद्धिर्भवतीति ज्ञेयम् ।

७७.प्रश्नः– मार्गशीर्षे विवाहो भवति न वेति ?

उत्तरम्– केषाञ्चिन्मते मार्गशीर्षमासेऽपि विवाहो भवति ।

७८.प्रश्नः– विवाहे गणनायां किं किं विचारणीयम् ?

उत्तरम्– वर्णो वश्यं तथा तारा योनिश्च ग्रहमैत्रिकाः ।
गणमैत्रं भकूटञ्च नाडी चैते गुणाधिकाः ॥ इति ।

७९.प्रश्नः– ताराकूटं कथं विचारणीयम् ?

उत्तरम्– कन्याभाद्वरभं यावत्कन्याभं वरभादपि ।
गणयेन्नवहृच्छेषे त्रिष्वद्रिभमसत्स्मृतम् ॥ इति ।

८०.प्रश्नः– वर्णानां कति वर्गाः भवन्ति ?

उत्तरम्– वर्णानामष्टौ वर्गाः भवन्ति ।

८१.प्रश्नः– के च ते वर्णानामष्टौ वर्गाः ?

उत्तरम्– अ-क-च-ट-प-य-श इति अवर्ग-चवर्गत्यादिभेदेन वर्णानामष्टौ वर्गाः ।

८२.प्रश्नः– वर्गविचारः कथं विधेयः ?

उत्तरम्– स्ववर्गात्पञ्चमो शत्रुश्चतुर्थो मित्रसंज्ञकः ।
उदासीनस्तृतीयः स्याद्वर्गभेदस्त्रिधोच्यते ॥ इति ।

८३.प्रश्नः– विवाहे सूर्यः शुभः कथं भवति ?

उत्तरम्– एकादशस्तृतीयो वा षष्ठश्च दशमोऽपि वा ।
वरस्य शुभदो नित्यं विवाहे दिननायकः ॥ इति ।

८४.प्रश्नः– यात्रायां दिक्शूलं कथं भवति ?

उत्तरम्– शनौ चन्द्रे त्यजेत्पूर्वां दक्षिणां हि दिशं गुरौ ।
सूर्ये शुक्रे पश्चिमायां बुधे भौमे तथोत्तरम् ॥ इति ।

८५.प्रश्नः– आवश्यके सति दिक्शूलेऽपि कथं यात्रा विधेया ?

उत्तरम्– सूर्यवारे घृतं, सोमवारे पयः,भौमे गुडं,बुधे तिलान्, गुरौ दधि, शुक्रे यवान्, शनौ माषान् भुक्त्वा यात्रा विधेये सति शूलदोषो नैव भवति ।

८६.प्रश्नः– योगिन्यः कस्यां दिशि कदा भवन्ति ?

उत्तरम्– प्रतिपन्नवमी पूर्वे द्वितीया-दशम्योत्तरे योगिनी भवति । एवमेव तृतीयायामेकादश्याञ्च अग्निकोणे, चतुर्थ्यां द्वादश्याञ्च नैर्ऋत्यां, पञ्चम्यां त्रयोदश्याञ्च दक्षिणस्यां, षष्ठ्यां चतुर्दश्याञ्च प्रतीच्यां, सप्तम्यां पौर्णमास्याञ्च वायव्यां,अष्टम्याममायाञ्च ईशान्यां दिशि योगिनीनां वासो भवति ।

८७.प्रश्नः– यात्राकाले योगिन्यः किं फलम् ?

उत्तरम्– योगिनी सुखदा वामे पृष्ठे मङ्गलदायिनी ।
दक्षिणे धनहन्त्री च सन्मुखे मरणप्रदा ॥ इति ।

८८.प्रश्नः– कैः सह यात्रायां नैव गन्तव्यम् ?

उत्तरम्– पिता पुत्रैर्न गन्तव्यं न गच्छेत्सोदरद्वयम् ।
नवस्त्रीभिर्न गन्तव्यं न गच्छेद् ब्राह्मणत्रयम् ॥ इति ।

८९.प्रश्नः– पर्वदिनानि कानि भवन्ति ?

उत्तरम्– चतुर्दश्यष्टमी कृष्णा अमावास्या च पूर्णिमा ।
एतानि पञ्च पर्वाणि रविसंक्रान्तिकं दिनम् ॥ इति ।

९०.प्रश्नः– कालयोगः कस्मिन्दिने कस्यां दिशि भवति ?

भौमे प्रतीच्याञ्च बुधे निऋत्य।
याम्ये गुरौ वह्निदिशाञ्च शुक्रे
मन्दे च पूर्वे प्रवदन्ति कालम् ॥ इति।

प्रश्नः- वधूप्रवेशः कदा ?
उत्तरम्- आरभ्योद्वाहदिवसात्षष्ठे वाऽप्यष्टमे दिने।
वधूप्रवेशः सम्पत्यै दशमेऽथ शुभे दिने ॥ इति।

१२ प्रश्न द्विरागमनस्य का परिभाषा ?
उत्तर विवाहसमये बाला व्रजेद्भर्तृगृहं प्रति।
पुनस्तातगृहाद्यात्रा तद्द्विरागमनं स्मृतम् ॥ इति।

१३ प्र. होमार्थमग्निवासः कदा कुत्र भवति ?
उ.- सैकास्तिथिर्वारयुता कृताप्ता
शेषे गुणेऽभ्रे भुवि वह्निवासः।
सौख्याय होमे शशियुग्मशेषे
प्राणार्थनाशौ दिवि भूतले च ॥ इति।

१४ प्र.- के मासाः गृहनिर्माणे शुभाः भवन्ति ?
उ.म्- वैशाखे श्रावणे मार्गे फाल्गुने च विशेषतः।
पत्नीपुत्रार्थलाभः स्याद् गृहकर्त्तुर्न संशयः ॥ इति।

१५ प्रश्नः- गृहप्रवेशे के मासाः प्रशस्ताः ?
उत्तरम्- माघेऽर्थलाभः प्रथमे प्रवेशे
पुत्राऽर्थलाभः खलु फाल्गुने च।
चैत्रेऽर्थहानिः धनधान्यलाभो
वैशाखमासे पशु-पुत्रकामः ॥
ज्येष्ठेषु मासेषु परेषु नूनं